★ दिसम्बर 2020
★ वर्ष 47 ★ अंक 12

₹

₹15/-

हँसती दुनिया

VISIT…

हँसती दुनिया

• वर्ष 47 • अंक 12 • दिसम्बर 2020 • पृष्ठ 52
बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : **सी. एल. गुलाटी**
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरकारी कालोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

प्रबन्ध–सम्पादक
सुलेख साथी

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
11. समाचार
41. क्या आप जानते हैं?
44. पढ़ो और हँसो
50. कभी न भूलो?

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

कहानियां

8. फूलदान की कीमत
: फेनम सौगानी
16. वाणी पर नियंत्रण
: रामकुमार सेवक
18. नीलम परी और मोनू
: गोविन्द भारद्वाज
26. चोरी की सजा
: दीपक पाठक
31. जन्मदिन का अनोखा तोहफा
: कमल सौगानी
38. मेरी क्रिसमस
: सेवा नन्दवाल
49. जब चाणक्य ने चन्द्रगुप्त ....
: अंकुश जैन

विशेष/लेख

10. बाल दिवस
21. मुनि मछली
: परशुराम शुक्ल
24. शून्य
: ऊषा सभरवाल
28. विदेशों में भी मनती है दीवाली
: ईलू रानी
30. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमण्डीलाल अग्रवाल
42. रंगहीन, गंधहीन नाइट्रोजन गैस
: अर्चना जैन
46. आग उगलता पहाड़ है ज्वालामुखी
: कैलाश जैन

कविताएं

7. दीवाली
: मदनेन्द्र
7. दीपावली
: अश्वनी कुमार 'जतन'
17. आगे बढ़ना सीखो
: डॉ. रामदुलार सिंह
17. माता-पिता
: अंशु अडवानी
23. वन दीवाली
: महेन्द्र कुमार वर्मा
23. मानवता के दीप जले
: राजकुमार जैन
25. सूरज और हवा
: कमलसिंह चौहान
25. क्रिसमस
: राजेश चौधरी
33. चिड़िया
: गफूर 'स्नेही'
33. बाल मुक्तक
: कैलाश त्रिपाठी
43. प्यारे बच्चे
: हरीप्रसाद धर्मक
43. अच्छे बच्चे
: महेन्द्र सिंह शेखावत

सबसे पहले

अलविदा 2020

जब भी नववर्ष आता है। हम सभी उसे उल्लासपूर्वक मनाने के अनेकों तरीके ढूंढते हैं और उसका स्वागत भी करते हैं। अपने मित्रों, परिजनों, सहयोगियों, सहपाठियों और सहकर्मियों को शभुकामना भी देते हैं और लेते भी हैं। इस वर्ष भी हमने अनेकों संकल्प लिए होंगे और पूरा करने के साधन भी जुटाएं होंगे। वर्ष पूरा होने को आ गया सभी सोच रहे होंगे कि हमने इस वर्ष क्या किया और क्या अधूरा ही छूट गया?

इस वर्ष अचानक ही एक 'वायरस' से सारे विश्व को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। लाखों लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी। अपने परिजनों, मित्रों, साथियों के साथ घूमना-फिरना, खाना-पीना, पढ़ना-पढ़ाना, व्यापार-कारोबार में चुनौतियों का सामना करना पड़ा। किसी की नौकरी चली गई, किसी को व्यापार में घाटा हुआ, किसी की शादी नहीं हो पाई, किसी को अपने ही परिवार के सदस्यों को मिलने में परेशानी हुई इत्यादि-इत्यादि।

साथियों! सोचने का विषय यह भी है कि ऐसी विषम परिस्थितियों में जहाँ मानसिक तनाव भी लोगों की चिन्ता का कारण बना वहाँ लाखों लोग भूखे रहने, पैदल यात्रा करने और एक-दूसरे से दूरी बनाने पर भी मजबूर हुए। फिर भी क्या हमें सिर्फ कठिन परिस्थितियों ने कुछ सिखाया भी है। इस पर भी चिन्तन एवं मनन आवश्यक है।

आओ देखें कि वर्ष 2020 ने हमें क्या अनुभव दिए हैं और एक नयी जीवनशैली को अपनाने का ढंग भी प्रदान किया है।

वास्तव में जब भी परिस्थितियां, हालात हमारे अनुसार नहीं होते तो हम अधिक बलवान, धैर्यवान एवं संयम के साथ उसका सामना करते हैं। इस प्रकार हमने इस वर्ष चुनौतियों का सामना करना सीखा। विषम एवं कठिन हालात में भी दूर रहकर कैसे एक-दूसरे का सहयोग कर सकते हैं। एक-दूसरे का मनोबल बढ़ा सकते हैं। निसन्देह सम्पूर्ण विश्व के लिए यह एक साहस एवं संघर्षपूर्ण समय रहा है।

हमने कुछ ऐसे परिवर्तन भी अपनी दिनचर्या में अपनाये जिनके बारे में शायद कभी सोचा भी न होगा। जैसे कि-

– अपने हाथों की, शरीर की, घर की और आस-पास की स्वच्छता और सफाई को मुख्य रूप से अपनाना होगा।

– खाने-पीने में शुद्ध एवं पौष्टिक वस्तुओं का सेवन करना होगा।

– शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना होगा।

– नित्य व्यायाम भी अवश्य करना होगा।

– अपने तन के साथ-साथ अपने मन को स्थिर एवं मजबूत तथा विषम परिस्थितियों के अनुसार ढालने का ढंग भी अपनाना होगा।

– मानसिक सन्तुलन एवं संयम को अपनाना होगा।

– स्वच्छता और सफाई का अधिक से अधिक ध्यान रखना होगा।

– अपने साथ-साथ अन्य लोगों को भी सावधानीपूर्वक हर कार्य करने की प्रेरणा देनी होगी।

– जिनके पास खाने-पीने की व्यवस्था नहीं है। उनका भी ख्याल रखना होगा। चाहे वह व्यक्ति है या पशु-पक्षी या कोई अन्य।

– हमें जल एवं अनाज को व्यर्थ नहीं गंवाना।

– पर्यावरण के संतुलन को बनाकर रखना होगा।

इस प्रकार वर्ष 2020 ने ऐसी अनेकों शिक्षाएं दी हैं जिससे यह समझ में आ जाता है कि कम खर्च में भी अनेकों कार्य किये जा सकते हैं तथा दूर रहकर भी अपने साथ होने का एहसास किया जा सकता है।

हमें धन्यवाद देना चाहिए कि कई सामाजिक कुरीतियां, जिनका बड़े-बड़े नेता और समाज सुधारक कुछ नहीं कर पाए परन्तु परिस्थितियों ने बता दिया कि सब कुछ सम्भव है। केवल करने की दृढ़ता, क्षमता एवं साहस का होना जरूरी है इसलिए वर्ष 2020 का धन्यवाद, आभार और बाय-बाय।

– विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 226

तन मन धन तिन्नां तों उच्ची ओह सेवा कहलान्दी ए।
जो होवे निष्काम निरिच्छित ते सतगुर नूं भान्दी ए।
देश काल ते समें मुताबक सतगुर जिवें चलान्दा ए।
हुकम एहदा सिर मत्थे धर के गुरसिख चलदा जान्दा ए।
जग विच मान ओह गुरसिख पान्दा दरगाहीं परवान होवे।
कहे अवतार ओहदा हर वेले राखा एह भगवान होवे।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी सेवा की महत्ता बताते हुए कह रहे हैं कि सेवा तन, मन, धन से निष्काम भाव से की जाती है। सेवा करने में तन और धन का योगदान हो और मन लगाकर की जाए तभी लाभकारी होती है। हमेशा सेवा कामनाओं, इच्छाओं से ऊपर उठकर करनी चाहिए। मैं सेवा कर रहा हूँ तो मुझे यह फल मिलना चाहिए, यह भाव कामना से भरा हुआ है। ऐसा करना ठीक नहीं है। सेवा का भाव हमेशा निर्लेप अवस्था वाला होना चाहिए कि मैं आज्ञा के अनुसार सेवा कर रहा हूँ, फल देना, न देना या कब देना यह सद्गुरु-निरंकार के हाथ है। विनम्र भाव से की गई सेवा सद्गुरु को भाती है और सेवक को निहाल करती है। ध्यान रहे कि मन का झुकाव, आकांक्षाएं, लालसाएं, चाहतें अनंत हैं। इनसे ऊपर उठेंगे तभी निरिच्छित भाव से सेवा करने में सफल होंगे। सेवा करने से लाभ ही लाभ है। सेवा का सबसे बड़ा लाभ यह है कि सेवक की हर पल रक्षा यह प्रभु स्वयं करता है। प्रभु उसका राखा बनता है। उसका कोई नुकसान नहीं होने देता।

देश काल और समय के अनुसार सद्गुरु सेवा करने का रास्ता दिखाता है। गुरसिख उसी रास्ते पर बिना किसी आनाकानी के, बिना किसी प्रकार की किन्तु-परन्तु किए चलता जाता है। किस समय और किस स्थान पर कैसे सेवा करनी है, क्या सेवा करनी है? सद्गुरु इसे स्पष्ट करता है और गुरसिख सत्वचन कहकर सेवा करता जाता है। गुरसिख गुरु का हुक्म सिर माथे रखता है, आज्ञा में रहता है और सहज रूप में सेवा करता है। ऐसे सेवक की सेवा, हरि की दरगाह में परवान होती है, परमात्मा की अदालत में स्वीकार की जाती है और यह उसे हर जगह मान-सम्मान, यश-कीर्ति दिलाती है।

सेवा विनम्र भाव से पूरी तहर समर्पित होकर की जाती है। जिसकी सेवा की जा रही है उसे सद्गुरु-निरंकार का रूप मानकर की जाती है। सेवा में भाव प्रमुख होता है। भाव अच्छा न हो तो सेवा भी अच्छी नहीं हो पाती है।

बाबा अवतार सिंह समझा रहे हैं कि सद्गुरु की आज्ञा में रहकर तन, मन, धन से समर्पित होकर सेवा करने से हर पल रक्षा होती है और समस्त लौकिक और पारलौकिक सुख सहज ही मिलते जाते हैं।

अनमोल वचन

संग्रहकर्ता : प्रियंका चोटिया 'आंचल'

★ गुरुजन रास्ता दिखाते हैं, चलना आपको स्वयं पड़ता है।

★ इस धरती पर अगर कहीं स्वर्ग है तो वह है माँ के चरणों में है।

★ मूर्खों से प्रशंसा के राग सुनने की अपेक्षा बुद्धिमान व्यक्ति की फटकार सुनना अधिक श्रेयस्कर है।

★ समझदारी का एक लक्ष्य यह है कि दुस्साहस न करे।

★ मानव जितना महान होगा उतना ही नम्र होगा।

★ सुन्दर सदा शुभ नहीं होता किन्तु शुभ सदा सुन्दर होता है।

★ यदि आदमी सीखना चाहे तो उसकी हरेक भूल उसे कुछ शिक्षा दे सकती है।

★ अग्नि स्वर्ण की परीक्षा करती है और प्रलोभन सच्चे मानव की।

★ शिष्टता ही व्यवहार का सौन्दर्य है।

★ शुभ कर्मों से शक्ति बढ़ती है।

★ आदर्शवादी व्यक्ति वह है जो दूसरों की समृद्धि में सहायक हो।

★ बिना निराश हुए पराजय को सह लेना, पृथ्वी पर साहस ही सबसे बड़ी परीक्षा है।

★ प्रशंसा के भूखे यह साबित कर देते हैं कि वे योग्यता में कंगाल हैं।

★ अहिंसा वास्तविक शक्ति का प्रतीक है।

★ पवित्रता वह धन है जो प्रेम के बाहुल्य से पैदा होता है।

★ निरन्तर कार्य करने वाला व्यक्ति कभी दुखी नहीं होता।

★ सत्यपरायण मनुष्य किसी से घृणा नहीं करता।

★ क्षमा कर देना सबसे बड़ा दंड है।

★ सर्वत्र स्वार्थसिद्धि का स्वप्न देखने वाला एक दिन अवश्य ही अपने यश और सम्मान से हाथ धो बैठता है।

★ अपनी योग्यता पर विश्वास न करने वाला सदैव भयभीत रहता है।

★ श्रेष्ठता का अर्थ सफल होने से नहीं बल्कि सफलता को आदत बना लेने से है।

★ दुर्भाग्य उन्हें नहीं छलता जिन्हें सौभाग्य धोखा नहीं देता।

★ जैसे हीरा रोशनी के सामने चमक उठता है। ठीक वैसे ही मनुष्य पुस्तकों के सम्पर्क में आकर ज्ञानपुंज बन सकता है।

★ सफलता साहस की संतान है।

★ शिक्षा की जड़ें भले ही कड़वी हों परन्तु उसके फल मीठे ही होंगे।

★ दो बातों को प्रकट कर देना चाहिये। अपने अवगुण और दूसरों के गुण।

बाल कविता : मदनेन्द्र

दीवाली

दीपों का त्योहार दीवाली,
खुशियों का उपहार दीवाली।

ऐसी सजी-धजी लगती है,
ज्यों फूलों की डार दीवाली।

आई है 'भू' को पहनाने,
दीपों के ले हार दीवाली।

लिए फुलझड़ी और मिठाई,
हमको रही पुकार दीवाली।

किरणों की बौछार दीवाली,
दीपों की कतार है दीवाली।

कविता : अश्वनी कुमार 'जतन'

दीपावली

बच्चों खुशियां खूब मनाओ,
रंग-बिरंगे दीप जलाओ।
देने फिर खुशहाली आई,
प्यारी दीपावली है आई।।

घर-घर दीप जलाना है,
खूब मिठाई खाना है।
पटाखे नहीं बजाना है,
पर्यावरण को बचाना है।।

मत करना बच्चो मनमानी,
पटाखों से नहीं छेड़ाखानी।
सभी के चेहरों पर है लाली,
'जतन' सभी को शुभ दीवाली।।

बोधकथा : फेनम सौगानी

फूलदान की कीमत

एक बार एक राजा के दरबार में एक ईरानी व्यापारी कांच के कई सुन्दर-सुन्दर तोहफे लेकर उपस्थित हुआ। वह राजा को तरह-तरह के तोहफे दिखाने लगा और उनकी कीमत भी बताता जा रहा था।

राजा ने कांच से निर्मित समूचे तोहफे देखने के उपरान्त एक फूलदान को हाथ में लिया और उछालकर पटक दिया।

राजा की यह हरकत देखकर कई दरबारी आपस में कानाफूसी करने लगे। तभी व्यापारी ने राजा के पैरों में गिरकर गिड़गिड़ाते हुए कहा– महाराज! आखिर मुझसे ऐसी क्या खता हुई, जो आपने मेरे कीमती फूलदान को फोड़ डाला? मैंने तो सुना था, आप कला के बड़े पारखी हैं? देश-विदेश की अनूठी कलाओं का आदर सम्मान करते हैं?

यह सुनकर राजा ने मुस्कुराकर हँसते हुए कहा– अच्छा व्यापारी! जरा यह तो बताओ, इस फूलदान की कीमत क्या थी?

व्यापारी ने रुधे स्वर में बताया, पहले तो

इसकी कीमत दो आने थी लेकिन अब तो यह फूटी कौड़ी के बराबर है।

व्यापारी के मुख से ऐसी बात सुनकर राजा ने अपने सेवक से कहा– टेबिल पर रखे पीतल के फूलदान को पत्थर से खूब पीटो और बाजार में बेच आओ।

सेवक ने ऐसा ही किया। वह उसे एक पैसे में बेच आया। उसने वह पैसा राजा को दे दिया।

तब राजा ने व्यापारी से कहा– प्रिय भाई, मेरा वतन गरीब जरूर है लेकिन वह टूटी-फूटी वस्तु के भी कुछ न कुछ दाम पाना चाहता है।

राजा की बात सुनकर व्यापारी चुपचाप अपने तोहफे समेटकर जाने लगा तो द्वार पर खड़े सेवक ने उसे दो आने अदा करते हुए कहा– अपने फूलदान की कीमत तो लेते जाओ।

वह बोला– जब कोई सौदा ही नहीं हुआ तो भला कीमत क्यों लूं?

इस पर राजा ने कहा– तुम्हारी कला का मैं आदर करता हूँ। अत: उसकी भरपाई की कीमत अदा करना मेरा कर्तव्य है। मैं नहीं चाहता कि तुम अपने मुल्क में जाकर मेरे भारत देश की बदनामी करो।

व्यापारी ने उस फूटे फूलदान की कीमत ग्रहण कर ली। फिर घोड़े पर बैठकर अपने मुल्क की तरफ चल पड़ा।

स्वदेशी वस्तुओं से प्यार करने वाले ये राजा पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह थे।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू का जन्मदिन 14 नवंबर को आता है। इस दिन को विशेषतौर पर 'बाल दिवस' के रूप में मनाया जाता है क्योंकि नेहरू जी को बच्चों से बहुत प्यार था और बच्चे उन्हें 'चाचा नेहरू' कहकर पुकारते थे। इस प्रकार बाल दिवस को मनाया जाने लगा। बाल दिवस बच्चों को समर्पित भारत का राष्ट्रीय त्यौहार है। देश की आजादी में भी नेहरू जी का बड़ा योगदान था। प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने देश का उचित मार्गदर्शन किया था। बच्चों के कल्याण पर 'विश्व कांफ्रेंस' में बाल दिवस मनाने की सर्वप्रथम घोषणा हुई। 1954 में दुनियाभर में इसे मान्यता मिली।

बाल दिवस बच्चों के लिए महत्वपूर्ण दिन होता है। इस दिन स्कूली बच्चे बहुत खुश दिखाई देते हैं। वे सज-धजकर विद्यालय जाते हैं। विद्यालयों में बच्चे विशेष कार्यक्रम आयोजित करते हैं। बाल मेले में बच्चे अपनी बनाई हुई वस्तुओं की प्रदर्शनी भी लगाते हैं। इसमें बच्चे अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। नृत्य, गान, नाटक आदि भी प्रस्तुत किए जाते हैं।

बच्चे देश का भविष्य हैं। इसलिए हमें सभी बच्चों की शिक्षा की तरफ ध्यान देना चाहिए। खासतौर पर बालश्रमरोधी कानूनों को सही मायनों में पूरी तरह से लागू किया जाना चाहिए। अनेक कानून बने होने के बावजूद बाल श्रमिकों की संख्या में वर्ष दर वर्ष वृद्धि होती जा रही है। इन बच्चों का सही स्थान कल-कारखानों में नहीं बल्कि स्कूल है।

बाल दिवस के अवसर पर केन्द्र तथा राज्य सरकार बच्चों के भविष्य के लिए कई कार्यक्रमों की घोषणा करती है। बच्चों के रहन-सहन स्तर को ऊँचा उठाना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। इन्हें स्वस्थ, निर्भीक और योग्य नागरिक बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। यह बाल दिवस का संदेश है।

– बेवदुनिया

समाचार

बाहरी ग्रह 'सुपर अर्थ' पर पहली बार पानी की खोज

लंदन (भाषा)। खगोल वैज्ञानिकों ने अत्यंत उत्साहित करने वाली खोज में पहली बार हमारे सौरमंडल से बाहर मौजूद एक ग्रह के वातावरण में पानी की खोज की है।

इस ग्रह पर धरती के समान तापमान मौजूद है जो हमारे सौरमंडल के बाहर एक दूरस्थ सितारे की कक्षा में मौजूद है जहाँ जीवन की संभावना है। धरती से आठ गुणा अधिक के द्रव्यमान वाला के2-18बी जानकारी में अब एकमात्र ऐसा बाह्यग्रह है जहाँ पानी और तापमान दोनों हैं जिससे वह रहने योग्य हो सकता है। ईएसए/नासा हब्बल स्पेस टेलीस्कोप के डेटा का इस्तेमाल कर अनुसंधानकर्ताओं ने पाया कि यह ग्रह एक ठंडे वामन सितारे के2-18 की कक्षा में है जो धरती से 110 प्रकाशवर्ष दूर 'लियो' तारामंडल में स्थित है। उन्होंने बताया कि यह खोज किसी सितारे के रहने योग्य क्षेत्र की कक्षा में मौजूद बाहरी ग्रह के लिए पहला सफल वायुमंडलीय आविष्कार है, एक ऐसी दूरी पर जहाँ पानी द्रव रूप में मौजूद हो सकता है।

ब्रिटेन की यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन (यूसीएल) के अनुसंधानकर्ता एंगेलोस सियारस के अनुसार– धरती के अलावा संभवत: रहने योग्य जगत में पानी मिलना अत्यंत उत्साहित करने वाला है। यह अध्ययन 'नेचर एस्ट्रोनॉमी' पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
-अजय कालड़ा

बहुत समय पहले की बात है। सुन्दरवन में पिंकू नाम का एक बूढ़ा खरगोश रहता था। वह बहुत विद्वान और बुद्धिमान था। जंगल के जानवर अक्सर उससे सलाह लेते थे

पिंकू खरगोश ने शास्त्रार्थ में सुरीली कोयल और विद्वान मैना को भी हरा दिया था। इसी कारण जंगल का राजा शेर भी उसका आदर करता था। धीरे-धीरे उसे अपनी विद्वता का घमण्ड हो गया था।

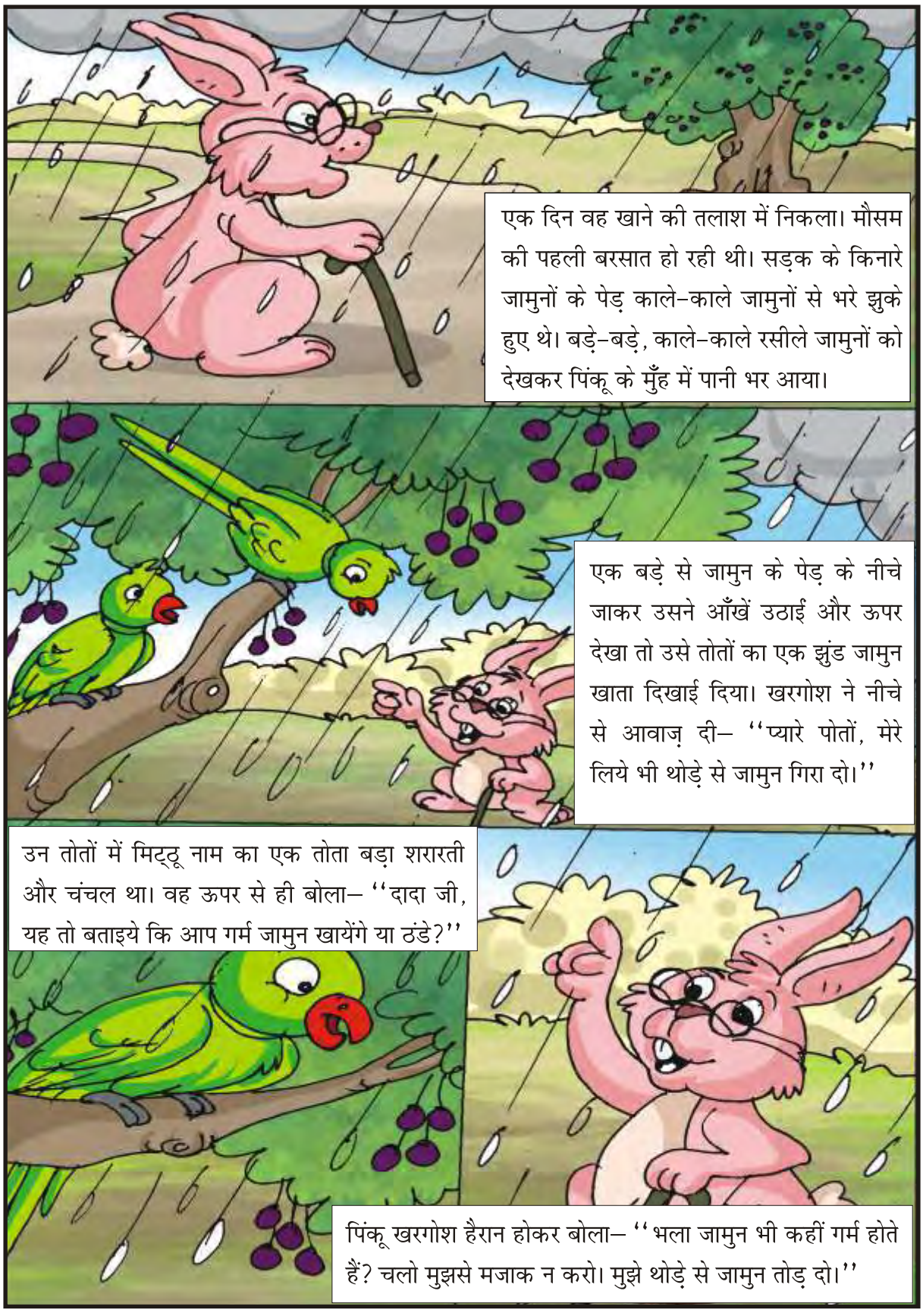
एक दिन वह खाने की तलाश में निकला। मौसम की पहली बरसात हो रही थी। सड़क के किनारे जामुनों के पेड़ काले-काले जामुनों से भरे झुके हुए थे। बड़े-बड़े, काले-काले रसीले जामुनों को देखकर पिंकू के मुँह में पानी भर आया।
एक बड़े से जामुन के पेड़ के नीचे जाकर उसने आँखें उठाई और ऊपर देखा तो उसे तोतों का एक झुंड जामुन खाता दिखाई दिया। खरगोश ने नीचे से आवाज़ दी– ''प्यारे पोतों, मेरे लिये भी थोड़े से जामुन गिरा दो।''
उन तोतों में मिट्ठू नाम का एक तोता बड़ा शरारती और चंचल था। वह ऊपर से ही बोला– ''दादा जी, यह तो बताइये कि आप गर्म जामुन खायेंगे या ठंडे?''
पिंकू खरगोश हैरान होकर बोला– ''भला जामुन भी कहीं गर्म होते हैं? चलो मुझसे मजाक न करो। मुझे थोड़े से जामुन तोड़ दो।''

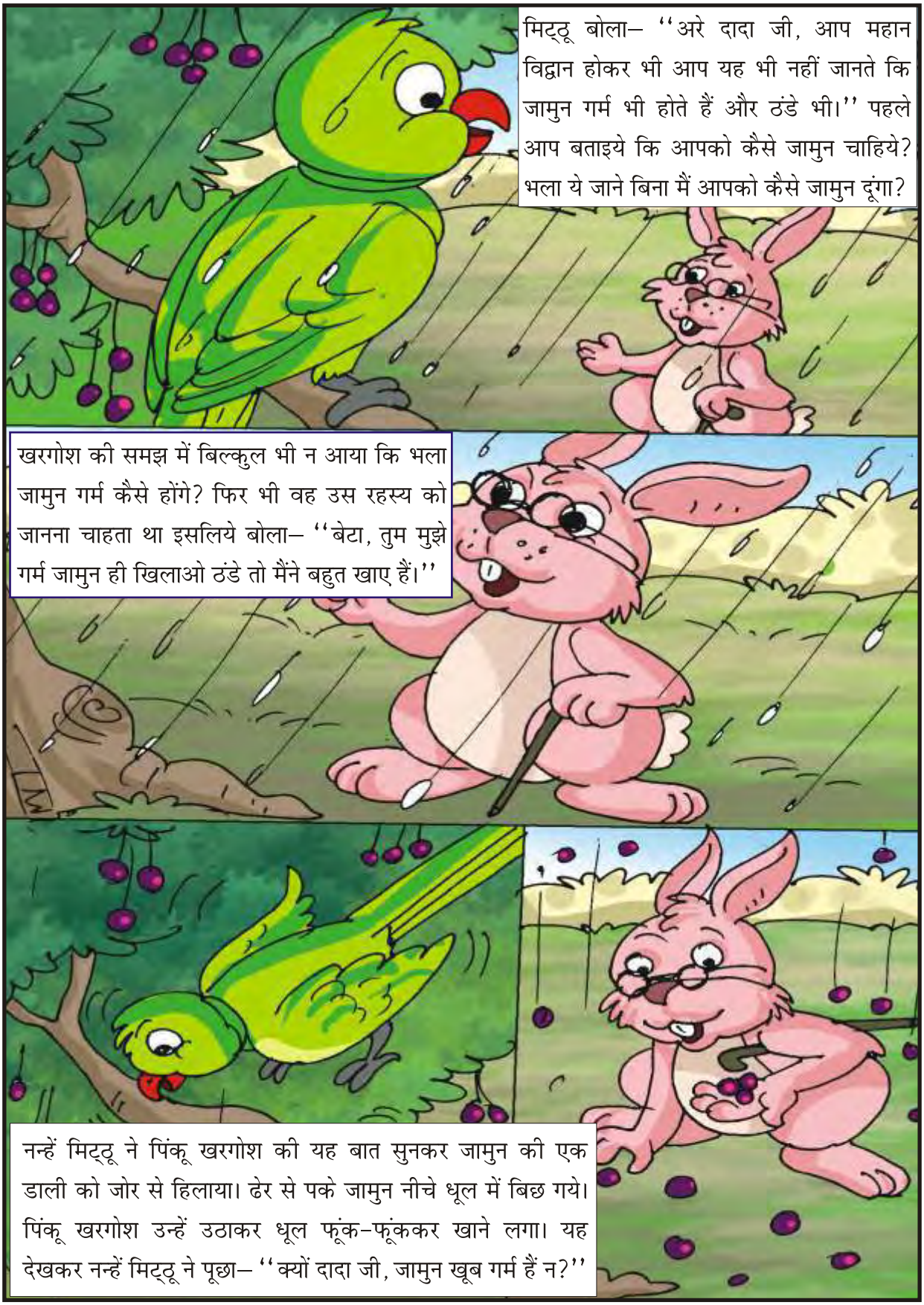
मिट्ठू बोला– ''अरे दादा जी, आप महान विद्वान होकर भी आप यह भी नहीं जानते कि जामुन गर्म भी होते हैं और ठंडे भी।'' पहले आप बताइये कि आपको कैसे जामुन चाहिये? भला ये जाने बिना मैं आपको कैसे जामुन दूंगा?
खरगोश की समझ में बिल्कुल भी न आया कि भला जामुन गर्म कैसे होंगे? फिर भी वह उस रहस्य को जानना चाहता था इसलिये बोला– ''बेटा, तुम मुझे गर्म जामुन ही खिलाओ ठंडे तो मैंने बहुत खाए हैं।''
नन्हें मिट्ठू ने पिंकू खरगोश की यह बात सुनकर जामुन की एक डाली को जोर से हिलाया। ढेर से पके जामुन नीचे धूल में बिछ गये। पिंकू खरगोश उन्हें उठाकर धूल फूंक-फूंककर खाने लगा। यह देखकर नन्हें मिट्ठू ने पूछा– ''क्यों दादा जी, जामुन खूब गर्म हैं न?''

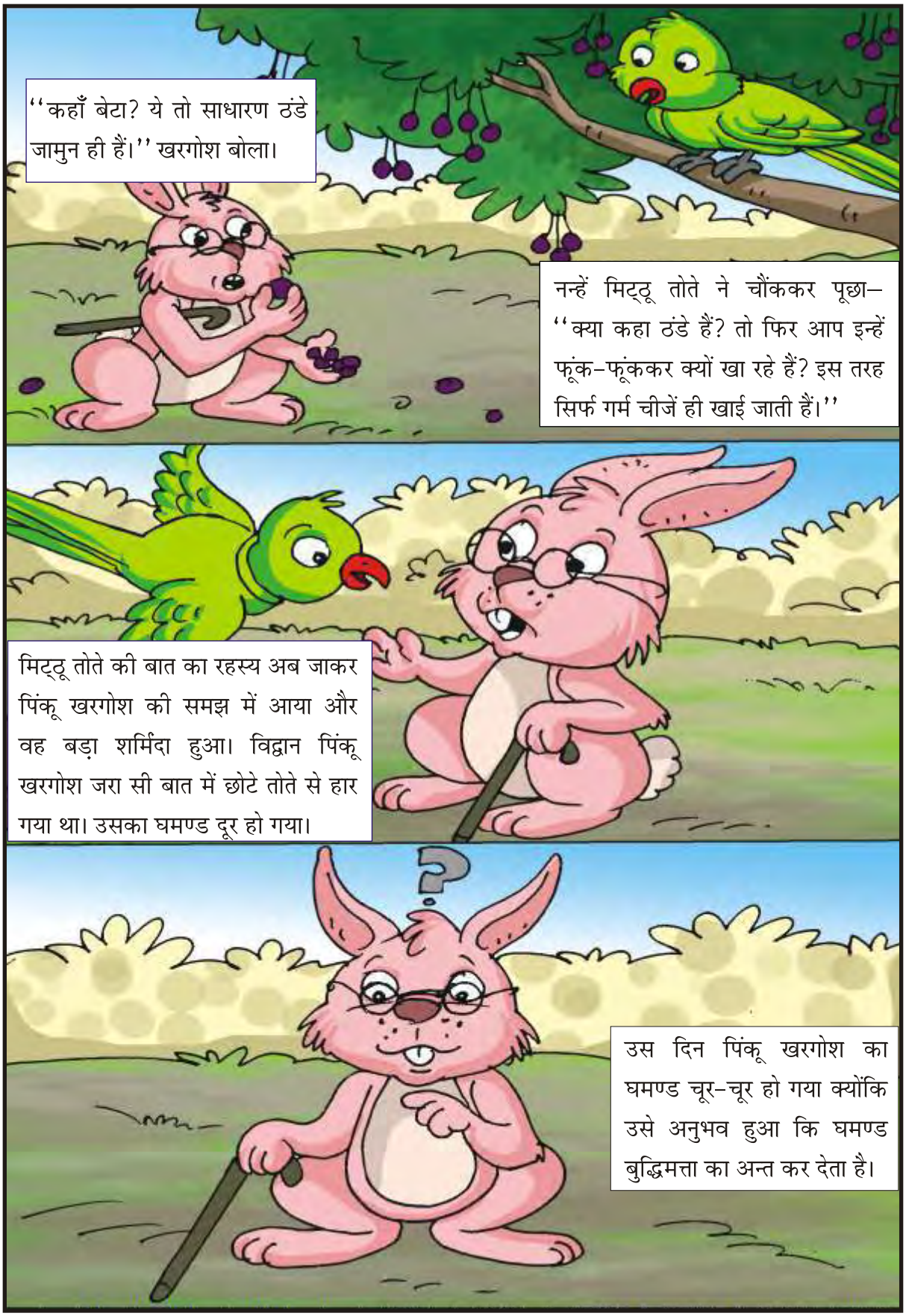
''कहाँ बेटा? ये तो साधारण ठंडे जामुन ही हैं।'' खरगोश बोला।
नन्हें मिट्ठू तोते ने चौंककर पूछा– ''क्या कहा ठंडे हैं? तो फिर आप इन्हें फूंक-फूंककर क्यों खा रहे हैं? इस तरह सिर्फ गर्म चीजें ही खाई जाती हैं।''
मिट्ठू तोते की बात का रहस्य अब जाकर पिंकू खरगोश की समझ में आया और वह बड़ा शर्मिंदा हुआ। विद्वान पिंकू खरगोश जरा सी बात में छोटे तोते से हार गया था। उसका घमण्ड दूर हो गया।
?
उस दिन पिंकू खरगोश का घमण्ड चूर-चूर हो गया क्योंकि उसे अनुभव हुआ कि घमण्ड बुद्धिमत्ता का अन्त कर देता है।

प्रेरक-प्रसंग : रामकुमार सेवक

वाणी पर नियंत्रण

एक बार एक बुजुर्ग आदमी ने अफवाह फैलाई कि उसके पड़ोस में रहने वाला नौजवान चोर है। यह बात दूर-दूर तक फैल गई। आस-पास के लोग उस नौजवान से बचने लगे।

नौजवान परेशान हो गया कि कोई उस पर विश्वास ही नहीं करता था।

तभी गाँव में चोरी की एक घटना हो गई और शक उस नौजवान पर गया। उसे गिरफ्तार कर लिया गया लेकिन कुछ दिनों के बाद सबूत के अभाव में वह निर्दोष साबित हो गया।

निर्दोष साबित होने के बाद वह नौजवान चुप नहीं बैठा। उसने बुजुर्ग आदमी पर गलत आरोप लगाने के लिए ग्राम पंचायत मुकदमा दायर कर दिया।

पंचायत में बुजुर्ग आदमी ने अपने बचाव में मुखिया से कहा– मैंने जो कुछ कहा था, वह एक टिप्पणी से अधिक कुछ नहीं था किसी को नुकसान पहुँचाना मेरा मकसद नहीं था।

मुखिया ने बुजुर्ग आदमी से कहा– आप एक कागज़ के टुकड़े पर वो सब बातें लिखें जो आपने उस नौजवान के बारे में कहीं थीं और जाते समय उस कागज़ के छोटे-छोटे टुकड़े-टुकड़े करके घर के रास्ते पर फेंक दें। कल फैसला सुनने के लिए आ जाएं।

बुजुर्ग व्यक्ति ने वैसा ही किया। अगले दिन मुखिया ने बुजुर्ग आदमी से कहा कि फैसला सुनने से पहले आप बाहर जाएं और उन कागज़ के टुकड़ों को जो आपने कल बाहर फेंक दिये थे, इकट्ठा करके ले आएं।

बुजुर्ग आदमी ने कहा– मैं ऐसा नहीं कर सकता। उन टुकड़ों को तो हवा कहीं से कहीं उड़ाकर ले गई होगी।

अब वे नहीं मिल सकेंगे। मैं कहाँ-कहाँ उन्हें खोजने के लिए जाऊंगा?

मुखिया ने कहा– ठीक इसी तरह एक सरल-सी टिप्पणी भी किसी का मान-सम्मान उस सीमा तक नष्ट कर सकती है जिसे वह व्यक्ति किसी भी दशा में दोबारा प्राप्त करने में सक्षम नहीं हो सकता।

इसलिए यदि किसी के बारे में कुछ अच्छा नहीं कह सकते तो चुप रहें।

बाल कविता : डॉ. रामदुलार सिंह

आगे बढ़ना सीखो

सूरज के उगने से पहले,
प्रतिदिन जगना सीखो।
चीं-चीं करती चिड़ियों से तुम,
गीत मिलन के सीखो।।

गुन-गुन करते भौरों से तुम,
मधुर गीत गाना सीखो।
फूलों-सा खिलकर जीवन में,
तुम हरदम हँसना सीखो।।

बड़े सुजन को सदा प्रेम से,
शीश झुकाना सीखो।
नदियों के कल-कल निनाद से,
आगे बढ़ना सीखो।।

बाल कविता : अंशु अडवानी

माता-पिता

माँ की ममता सबसे प्यारी,
सारे जग में सबसे न्यारी।
सबके दिल को भाने वाली,
प्यार का मोल सिखाने वाली।।

प्यार पिता का भी है अनोखा,
जीवन को उमंग से भरता।
हाथ पकड़कर हमें चलाता,
जीवन को है सुखमय करता।।

मात-पिता की सेवा करना,
प्यार नम्रता में ही चलना।
सदाचार अपनाते रहना,
जीवन खुशियों से तुम भरना।।

कहानी : गोविन्द भारद्वाज

नीलम परी और मोनू

एक था मोनू। वह स्कूल जाते समय बड़े नखरे करता था। उसके मम्मी-पापा उसकी इस आदत से बड़े परेशान रहते थे। वे मोनू की इस गंदी आदत से छुटकारा पाना चाहते थे।

एक रात मोनू अपने कमरे में सो रहा था। ''मोनू... ओ मोनू... क्या तुम सो रहे हो?''

यह सुनकर मोनू अपने बिस्तर पर उठकर बैठ गया। उसने खिड़की की ओर देखा। खिड़की के बाहर एक खूबसूरत-सी परी खड़ी थी। उसी ने मोनू को आवाज देकर उठाया था।

''आप कौन हैं?'' मोनू ने खिड़की के पास जाकर पूछा।

''मैं नीलम परी हूँ और परियों के देश से तुमसे मिलने आई हूँ।'' नीलम परी ने पलकें झपकाते हुए कहा।

मोनू बोला– ''आओ अन्दर आओ, बाहर क्यों खड़ी हो?''

''नहीं, नहीं। मैं बाहर ही ठीक हूँ।''– परी बोली।

''एक बात बताओ मोनू तुम स्कूल जाते समय नखरे क्यों करते हो? पता है तुम्हारी इस हरकत से तुम्हारे मम्मी-पापा कितने दुखी होते हैं।''

''आपको कैसे मालूम हुआ परी जी?''– मोनू ने पूछा।

''मैं परी हूँ। मैं दुनिया के सब बच्चों के माता-पिता का दुख जानती हूँ।'' नीलम परी ने उत्तर दिया।

''ठीक है परी जी, मैं अब कभी अपने मम्मी-पापा को दुखी नहीं करूंगा परन्तु मेरी एक शर्त है।''– मोनू ने कहा।

''कैसी शर्त?''

''आप रोजाना मुझसे मिलने आया करना और ढेरों खिलौने व मिठाईयां भी साथ में लाना।'' मोनू ने शर्त बताई।

नीलम परी मुस्कुराई और बोली– ''बस इतनी-सी बात। मैं रोजाना खिलौने व मिठाईयां तो भेज दिया करूंगी परन्तु आऊँगी महीने में एक बार क्योंकि मुझे तुम जैसे और बच्चों से भी मिलने जाना पड़ता है न।'' मोनू ने नीलम परी की बात मान ली। थोड़ी देर में टाटा ... बाय-बाय ... करते हुए वह चली गई। मोनू ने झट से दरवाजा खोलकर इधर-उधर देखा परन्तु वहाँ सुनसान अंधेरे के अलावा कुछ नहीं था। वह चुपचाप जाकर सो गया।

सुबह होते ही अलार्म बजा। मोनू तुरन्त उठा और सुबह के कार्य पूर्ण कर स्कूल जाने की तैयारी करने लगा। उसके मम्मी-पापा भी उठकर अपना-अपना काम करने लगे। अपने बेटे की अच्छी आदत को देखकर वे भी मन ही मन खुश थे।

प्रत्येक सुबह उसे कमरे के बाहर कुछ न कुछ सामान मिलने लगा। उसे विश्वास हो गया कि सचमुच नीलम परी उसके लिए खिलौने व मिठाईयां भिजवा रही है।

एक महीने बाद पुनः नीलम परी मोनू से मिलने आई। इस प्रकार यह सिलसिला जारी रहा। इस दौरान मोनू अच्छा बच्चा बन चुका था। उसने अपने विद्यालय में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर अपने मम्मी-पापा का नाम रोशन किया।

एक दिन मोनू ने नीलम परी की बात अपनी

मम्मी को बताई उसकी बात सुन वह बहुत हँसी और बोली– ''मेरा राजा बेटा, मैं ही नीलम परी का रूप लेकर तुम्हारे सामने आती रही। मेरे पास तुम्हें सुधारने का कोई दूसरा चारा नहीं था।''

''वो खिलौने और मिठाईयां।''– वह बोला।

''हाँ-हाँ वो भी मैं ही तुम्हारे लिए रखती थी।'' मम्मी ने उसके बालों में हाथ फेरते हुए कहा।

मोनू अपनी मम्मी से चिपक गया।

तीन चीजें

–हिमांशु भसीन, दिल्ली

☞ तीन चीजों में मन लगाने से फायदा होता है। – ईश्वर, मेहनत, विद्या।

☞ तीन चीजें हमें सदा प्रभु-परमात्मा की समझना चाहिए। – तन, मन, धन।

☞ तीन का हमेशा सम्मान करना चाहिए। – माता-पिता, गुरु, मेहमान।

☞ तीन चीजों से हमेशा बचना चाहिए। – बुरी संगति, स्वार्थ, निन्दा।

☞ तीन चीजें पर नियंत्रण रखें। – वाणी, आदत और गुस्सा।

☞ तीन चीजें जीवन में एक बार ही मिलती हैं। – माता-पिता, जवानी और मानव जन्म।

☞ तीन चीजें चली गई तो कभी वापस नहीं आती। – समय, शब्द और अवसर।

लेख : परशुराम शुक्ल

मुनि मछली

मुनि मछली एक वास्तविक शार्क है। अंग्रेजी में इसे 'मोंक फिश' कहते हैं। यह अन्य शार्कों के समान खतरनाक नहीं होती। इसलिए इसे 'फरिश्ता शार्क' भी कहा जाता है। मुनि मछली की ग्यारह जातियां हैं। सभी जातियों की मुनि मछलियां एक-दूसरे से बहुत मिलती-जुलती हैं। मुनि मछली विश्व के अधिकांश उष्णकटिबंधीय, उप-उष्णकटिबंधीय और समशीतोष्ण सागरों एवं महासागरों में पायी जाती है। यह अटलांटिक महासागर के दोनों ओर तथा भूमध्यसागर में बहुतायत से मिलती है। दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, जापान तथा उत्तर और दक्षिण अमेरिका के प्रशान्त महासागर के तटों पर भी इसकी संख्या बहुत अधिक है। मुनि मछली सागर तट के उथले पानी में रहना अधिक पसन्द करती है। इसकी कुछ जातियां गहरे पानी में रहती हैं। इन्हें 1260 मीटर की गहराई तक के भागों में देखा जा सकता है। मुनि मछली की गहरे सागर में रहने वाली जातियां भी प्राय: गर्मी के मौसम में सागर तट के निकट के उथले पानी में आ जाती है।

मुनि मछली की शारीरिक संरचना सागर की सामान्य मछलियों तथा शार्कों से पूरी तरह भिन्न होती है। वास्तव में यह शार्क और रे का मिश्रण है। इसकी शारीरिक संरचना में कुछ विशेषताएं शार्क की पायी जाती हैं और कुछ विशेषताएं रे की। मुनि मछली की लम्बाई 1.2 मीटर से लेकर 2.4 मीटर तक होती है। सबसे बड़ी मुनि मछली 'स्क्वाटीना स्क्वाटीना' है। इसकी लम्बाई लगभग 2.4 मीटर और शरीर का वजन 73 किलोग्राम तक होता है। मुनि मछली की पीठ और शरीर के ऊपर का रंग पीले से लेकर काला तक होता है। ग्रे अथवा कत्थई रंग की पीठ वाली मुनि मछलियां भी बहुत हैं। मुनि मछली के पेट और नीचे का भाग पूरी तरह सफेद होता है। इसकी पीठ और शरीर के ऊपर के भाग पर सफेद रेखाएं होती हैं और काले एवं सफेद रंग के धब्बे होते हैं।

मुनि मछली का सर चपटा और आगे की ओर चौड़ा होता है। इसके सर के सिरे पर मुँह होता है। इसके मुँह के ऊपर नथुने होते हैं जिनके

पास एक जोड़ा मूँछें होती हैं। इसकी मूँछें लम्बी होती हैं तथा मुँह के भीतर तक चली जाती हैं। मुनि मछली की पूँछ शार्क की तरह होती है किन्तु यह शार्क की पूँछ से अधिक पतली होती है। मुनि मछली की पूँछ शक्तिशाली होती है। यह इसी को चप्पू की तरह चलाकर सागर में तैरती है। मुनि मछली के मीनपंख शार्क और रे मछलियों की तरह होते हैं। इसकी पीठ पर दो मीनपंख होते हैं। ये दोनों मीनपंख पूँछ पर पीछे की ओर स्थित होते हैं। मुनि मछली के शरीर पर छाती के दो मीनपंख होते हैं। इसकी छाती के दोनों मीनपंख काफी बड़े और एक जैसे होते हैं। इसकी छाती के दोनों मीनपंख आगे की ओर झुके हुए होते हैं जिससे इनका आकार कंधे जैसा बन जाता है। मुनि मछली के पेट पर मीनपंख बड़े और चपटे होते हैं। इन्हीं मीनपंखों के कारण यह ऊपर से गिटार जैसी दिखाई देती है। इसीलिए इसे 'फिडल मछली' भी कहा जाता है। मुनि मछली के नितम्ब का मीनपंख नहीं होता। मुनि मछली के गलफड़ो के दो छिद्र होते हैं। इसके गलफड़ा छिद्र (गिलस्लिट्स) इसकी छाती के मीनपंखों के ठीक सामने होते हैं।

मादा मुनि मछली बच्चों को जन्म देने के लिए यह हमेशा सागर तट के उथले पानी में आ जाती है। गहरे पानी में पायी जाने वाली मुनि मछली की जातियां भी प्रजनन हेतु हमेशा उथले पानी में आ जाती हैं तथा जून-जुलाई के महीनों में जीवित बच्चों को जन्म देती हैं। मुनि मछली एक बार में लगभग 25 बच्चों को जन्म देती है किन्तु इसके चार-पाँच बच्चे ही वयस्क होने तक शेष बचते हैं। वयस्क मुनि मछली को तो केवल कुछ मछलियों से ही खतरा रहता है किन्तु मुनि मछली के नवजात बच्चों को सागर तट के उथले पानी में अनेक मांसाहारी जीव अपना आहार बनाते हैं।

मुनि मछली एक तेज मछली है। सागर तट के किनारे आ जाने वाली मुनि मछली की यदि पूँछ पकड़ ली जाये तो यह दायें-बायें उछलती है और बार-बार अपने जबड़े फैलाती है।

मुनि मछली एक उपयोगी मछली है। मछुआरे एक लम्बे समय से इससे परिचित हैं और इसका शिकार कर रहे हैं। आरम्भ में इसका उपयोग भोजन के रूप में नहीं किया जाता था बल्कि इसके शरीर के विभिन्न भागों से अनेक प्रकार की वस्तुएं बनाई जाती थीं। मुनि मछली की रूखी त्वचा से लकड़ी पर पॉलिश की जाती थी। इस लकड़ी से विशेष प्रकार के डिब्बे बनाये जाते थे। जिनका उपयोग आभूषण रखने के लिए किया जाता था। इसके साथ ही इसके शरीर के विभिन्न भागों को सुखाकर और पाउडर बनाकर तरह-तरह की दवाईयां बनाई जाती थीं। आज भी कुछ लोग त्वचा की बीमारियां दूर करने के लिए मुनि मछली के पाउडर का उपयोग करते हैं।

कविता :
महेन्द्र कुमार वर्मा

वन दीवाली

फूल बेचता बकरा माली,
जब आती वन में दीवाली।
ऊँट लगाता फल का ठेला,
लगता जब दीवाली मेला।

बेचे हाथी मस्त मिठाई,
जिसने खाई खुशियां पाई।
सब हैं चाचा सब हैं भाई,
भालू टेलर करे सिलाई।

बन्दर काका टोप लगा के,
बेच रहे फुलझड़ी पटाखे।
कोयल गीत सुनाती आई,
वन दीवाली सबको भायी।

कविता : राजकुमार जैन

मानवता के दीप जले

फैला नव उत्साह सभी में,
बंटी मिठाई आंगन में।
आई जगमग शुभ दीवाली,
खुशियां छाई हर मन में।।

दीप कतारों में कहते,
सीख नहीं भूलो साथी।
फैलाकर जग में प्रकाश,
तम में रह जाती बाती।।

द्वंद, द्वेष की करे विदाई,
हर मन-मंदिर प्रेम पले।
चलें निरन्तर सद्पथ पर सब,
मानवता के दीप जले।।

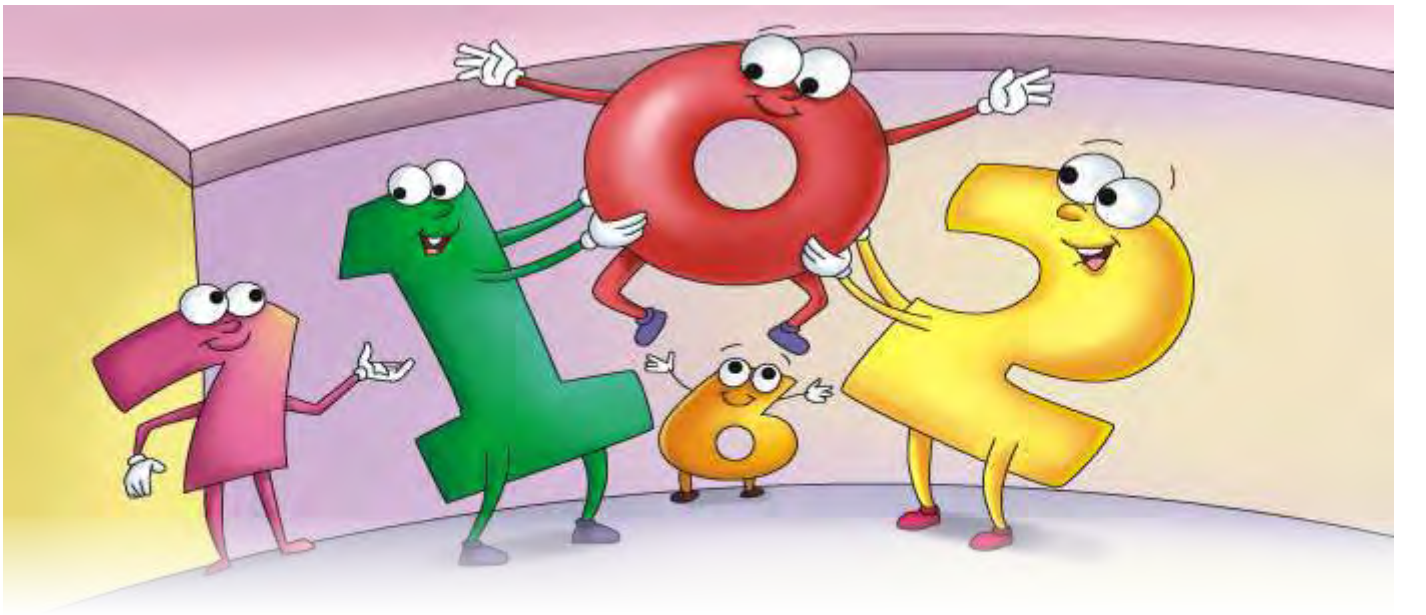

जानकारी लेख : ऊषा सभरवाल

शून्य

एक प्रसिद्ध गणितज्ञ ने, एक दिन सभी अंकों को एक पार्टी में आमंत्रित किया। जैसे ही मीटिंग शुरू होने वाली थी तो एक अंक ने देखा कि शून्य (ZERO) ज्योमेट्री-बॉक्स के नीचे छिप रहा है। उस अंक ने शून्य को बाहर निकालकर अध्यापक के सामने प्रस्तुत किया। अध्यापक ने पूछा– तुम छुप क्यों रहे थे?

शून्य ने कहा– मैं केवल शून्य हूँ। मेरी कोई कीमत नहीं है। मुझे बड़े-बड़े अंकों की पार्टी में नहीं आना चाहिए था।

अध्यापक के चेहरे पर मन्द-मन्द मुस्कान खिल उठी। उसने अंक 'एक' को बुलाया और सभी एकत्रित अंकों से पूछा– इसका मूल्य क्या है?

अंकों ने जोर से कहा– एक।

अध्यापक ने फिर पूछा– अब मूल्य क्या है?

जोर से आवाज़ आई– दस।

अध्यापक ने एक और शून्य से कहा– दस के आगे खड़े हो जाओ। अब इसका मूल्य क्या है?

सौ; फिर एक शून्य; अब मूल्य हजार हो गया। मूल्य बढ़ता रहा और देखते ही देखते शून्य की कतार आसमान को छूने लगी।

अध्यापक शून्य की तरफ मुड़ा और उससे पूछा– अब तुम अपना असली मूल्य देख सकते हो। दिखने में एक अत्यन्त छोटा अंक है पर जब आप उसके साथ मिल जाते हो तो मूल्य बढ़ने लगता है। तुम्हें केवल अपना कर्तव्य निभाना चाहिए और कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि मेरा कोई मूल्य नहीं है। परमात्मा की इस सृष्टि में हर एक चीज का अपना महत्व है। परमात्मा के विधान में कोई भी चीज बिना महत्व के नहीं है।

अगर हमें दूसरों के साथ मिलकर रहना आ जाए तो ये कहावत ठीक चरितार्थ हो जाती है कि एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं; केवल दो नहीं।

विता : कमल सिंह चौहान

सूरज और हवा

ड़िया बोली तितली डोली,
च्चों ने अब आँखें खोली।
ूरज ने किरणें बिखराई,
द्ध हवा ने ठण्डक घोली।।

ाली में कलियां शरमाई,
ोते ने भी टेर लगाई।
ूबा चंदा तारे छिप गये,
ढक भी अब टर्र-टर्र बोले।।

ूलों ने अब घूंघट खोला,
ांव-कांव कर कौआ बोला।
दक रहा है बछड़ा देखो,
-मैं करती बकरी भोली।।

हिलमिल कर रहते हैं सारे,
धरती माँ के बच्चे प्यारे।
अच्छा काम हो नाम बड़ा,
यह कहते माँ हँसकर बोली।।

कविता : राजेश चौधरी

क्रिसमस

दिखता है अब नव उत्साह।
उमड़ा सब में हर्ष अथाह।
हो गये सब आनंद विभोर।
सबको हुई है खुशी अपार।
आ गया क्रिसमस का त्यौहार।

कट रहे केक, बंट रहे केक।
परस्पर मिल रहे व्यक्ति अनेक।
बधाई का सब देते संदेश।
कर रहे लोग पत्र-व्यवहार।
आ गया क्रिसमस का त्यौहार।

प्रार्थना के गाते हैं गीत।
व्यक्त करते हैं भाव पुनीत।
तभी तो आपस में करते प्रीत।
प्रभु की करते जय-जयकार।
आ गया क्रिसमस का त्यौहार।

बाल कहानी : दीपक पाठक

चोरी की सजा

चन्दनवन में सभी जानवर बहुत मेलजोल से रहते थे। सब बहुत मेहनत से अपना-अपना काम करते थे लेकिन एक लोमड़ी मौसी ऐसी थी जो कुछ भी काम नहीं करती थी। लोमड़ी मौसी के लिए चन्दनवन में काम की कोई कमी नहीं थी लेकिन यह इतनी धूर्त और आलसी थी कि कोई काम करना नहीं चाहती थी।

लोमड़ी मौसी सारा दिन अपनी कुटिया में आराम करती और रात होने पर दूसरे जानवरों के घरों में चोरी-चोरी जाकर अपना पेट भरती। कई जानवरों ने लोमड़ी को चोरी-चोरी खाते पकड़ा था लेकिन वह फिर भी हेरा-फेरी करने से बाज नहीं आती थी।

एक दिन लोमड़ी जंगल में घूम रही थी। जंगल में भालू दादा मधुमक्खियों का एक छत्ता तोड़ रहे थे। लोमड़ी उस पेड़ के नीचे पहुँची। उसने भालू दादा से कहा– दादा! मैं छत्ता तोड़ने में आपकी मदद करना चाहती हूँ।

ठीक है! तुम मेरे लिए कुछ काम करोगी तो मैं तुम्हें खाने के लिए शहद दूँगा। तुम लकड़ियां और घास-फूस इकट्ठा करके पेड़ के नीचे जलाओ। लकड़ियों के धुएं से मधुमक्खियां दूर भाग जाएंगी तो मैं आसानी से छत्ता तोड़ लूंगा।

भालू दादा की बात मानकर लोमड़ी मौसी ने ऐसा ही किया। लकड़ियों के धुएं से मधुमक्खियां भाग गईं तो भालू दादा ने छत्ता तोड़ लिया। घर जाकर भालू दादा ने शहद निकाला और लोमड़ी मौसी को खाने को दिया। शहद बहुत स्वादिष्ट था। लोमड़ी मौसी के मन में सारा शहद खाने का लालच हो रहा था। वह मन ही मन सारा शहद खा जाने की तरकीब सोचने लगी।

अगले दिन लोमड़ी मौसी और भालू दादा जंगल में गये। बहुत देर तक दोनों जंगल में घूमते रहे। बहुत देर के बाद उन्हें एक मधुमक्खियों का छत्ता दिखाई दिया। भालू दादा ने लोमड़ी से लकड़ियां इकट्ठी करके जलाकर धुआं करने को कहा। लोमड़ी तो वहाँ से भागकर भालू दादा की झोपड़ी में रखे शहद को चट कर जाने की तरकीब सोच रही थी।

भालू दादा ने लोमड़ी से लकड़ियां इकट्ठी करने के लिए कहा तो वह झट से बोली– ''दादा! मुझे बहुत जोर की प्यास लगी है। मेरा गला सूख रहा है। मैं नदी पर अभी पानी पीकर

आती हूँ।'' यह कहकर लोमड़ी नदी की ओर दौड़ पड़ी।

बहुत देर तक लोमड़ी नहीं आई तो भालू दादा खुद ही लकड़ियां इकट्ठी करने लगे। लोमड़ी मौसी दौड़ती हुई भालू दादा के घर पहुँची और वहाँ रखा हुआ शहद खाकर दौड़ती हुई जंगल में भालू दादा के पास पहुँची। भालू दादा लकड़ियां जलाकर छत्ता तोड़ चुके थे। लोमड़ी मौसी के साथ घर लौटकर भालू दादा ने हांडी देखी तो बड़ा हैरान हुआ। हांडी में शहद नहीं था।

भालू दादा ने नये छत्ते में से लोमड़ी को शहद दिया अगले दिन फिर दोनों मिलकर जंगल में गये। एक छत्ता ढूंढ़कर भालू दादा ने लोमड़ी से लकड़ियां इकट्ठी करके आग जलाने के लिए कहा। तभी लोमड़ी ने प्यास का बहाना किया और नदी की ओर दौड़ पड़ी।

भालू को लोमड़ी की हरकत पर हैरानी हुई और वह लोमड़ी के जाने के बाद अपनी झोपड़ी की ओर चल दिया। उसे लोमड़ी पर शहद चोरी का संदेह हो गया था। लोमड़ी शहद खाकर झोपड़ी से बाहर निकल ही रही थी कि भालू दादा ने उसे पकड़ लिया।

आज भी लोमड़ी सारा शहद चट कर गई थी। भालू ने लोमड़ी को पकड़कर डंडे से खूब पिटाई की। चंदनवन के दूसरे जानवर भी वहाँ इकट्ठे हो गये थे। सबने लोमड़ी को पीटते हुए देखा। उसे उसकी करनी का फल मिल चुका था।

भालू की मार खाकर लोमड़ी शर्म के मारे चंदनवन छोड़कर दूसरे वन में चली गई।

दीपावली पर विशेष : ईलू रानी

विदेशों में भी मनती है दीवाली ....

बच्चों! यह बात तो तुम अच्छी तरह जानते ही हो कि हमारे देश में दीवाली के दिन लक्ष्मी की पूजा की जाती है ताकि लक्ष्मी सदा प्रसन्न रहे लेकिन तुम्हें जानकर अचरज होगा कि हमारे देश से दूर देशों में भी लक्ष्मी की उपासना की जाती है। भिन्न-भिन्न देशों में लक्ष्मी के कई रूप और नाम हैं। आओ विदेशों की लक्ष्मी के बारे में जानते हैं।

बाली द्वीप में लोग हर वर्ष अक्टूबर के महीने में एक उजाला पर्व मनाते हैं। इस पर्व में घरों में रंग-बिरंगे कंदील प्रज्ज्वलित कर बहुरंगी सजावट की जाती है तथा 'मिश्रान' नामक देवी की पूजा अर्चना धान से की जाती है। मिश्रान को यहाँ धन की देवी के नाम से जाना जाता है। पूजा के उपरान्त लोग आतिशबाजी करते हैं, गरीबों को भोजन खिलाते हैं और पालतू पशुओं को गुड़, चारा, गन्ना व अनाज से बने विविध व्यंजन खिलाते हैं।

मध्य अफ्रीका के आदिवासी शीशम के पेड़ को धन का देवता मानकर उत्सव मनाते हैं। इस उत्सव में वे अपने बदन पर जंगली पशुओं की खाल से बने कपड़े पहनकर शामिल होते हैं। इनके हाथों में मशाल जलती होती है और पेड़ की परिक्रमा कर फल व शहद चढ़ाते हैं ताकि धन देवता प्रसन्न होकर कृषि की पैदावार में कोई बाधा न आने दे। यह पर्व अक्टूबर की पूर्णिमा को मनाया जाता है।

चिली में धन की देवी 'यापासी' है। दन्तकथा के अनुसार यह किसी जमाने में जंगल की परी थी लेकिन एक जंगली देवता के वरदान के कारण यह 'धन की देवी' के रूप में चर्चित हो गई। काले पत्थर से बनी इसकी प्रतिमा दो ढाई फीट की होती है। चिली के निवासी इस देवी की पूजा उपासना करने के लिये नये परिधान पहनते हैं जंगली फलों के रस से इसका अभिषेक करते हैं ताकि देवी प्रसन्न होकर धन में वृद्धि कर सके।

कोरिया में धन की देवी को 'इतिहा' कहा जाता है। वर्षा का मौसम आने से पूर्व इस देवी को नये परिधान पहनाकर सजाया जाता है। धूपबत्ती कर इस देवी के समक्ष लोग सामूहिक प्रार्थना करते हैं– ''माँ पानी अच्छा बरसाना ताकि फसल भरपूर मात्रा में उपज सके।'' उनका विश्वास है कि इस प्रार्थना से देवी प्रसन्न होकर अच्छी बरसात अपनी दिव्य शक्ति से करती है।

बर्मा के लोग चांदी, पीतल, तांबे, कासे व

अष्टधातु से बने प्राचीन सिक्कों को लक्ष्मी का अवतार मानते हैं। मान्यता है कि इनकी पूजा करने से लक्ष्मी कई कष्ट व रोग हरती है। घर में खुशहाली रहती है। फसल प्रचुर मात्रा में पैदा होती है। कर्ज से छुटकारा मिलता है। इन सिक्कों की पूजा 'शरद पूर्णिमा' की उजली रात में की जाती है।

कहते हैं पूजा से प्रसन्न होकर लक्ष्मी की दिव्य शक्तियां इन सिक्कों में समा जाती है, जो घर की बाधाओं को दूर कर खुशहाली में परिवर्तित कर देती है।

बेबोलोनिया में 'सीसू' नामक देवी की उपासना की जाती है। इसके चार हाथ होते हैं तथा चारों हाथों की मुट्ठियां बन्द होती हैं। कहते हैं इन बन्द हाथों में धन का उदृश्य खजाना छिपा रहता है। हाथ में जलता दीपक लेकर इसकी प्रार्थना करने से देवी प्रसन्न होती है तथा धन की वृद्धि करती है।

क्यूबा, गायना, बेल्जियम और इथोपिया देशों में भी धन की देवी के दर्शन होते हैं। यहाँ की धन की देवी के नाम क्रमशः जिलीटा, पेरिना, मिंह और रसिट्यूला हैं। हमारे देश की दीपावली के दिनों ही इस देवी की पूजा उपासना की जाती है और बारूद, पोटाश से बनी विविध आतिशबाजी की जाती है।

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

ये भी जानें !

★ सैपोडिल्ला नामक पेड़ के रस को जमाकर च्युइंगम बनाया जाता है।

★ स्ट्रॉबेरी एक ऐसा फल है जिसके बीज बाहर होते हैं।

★ भारत में सिर्फ एक जगह हिमाचल प्रदेश के मंडी में ही 'पहाड़ी नमक' पाया जाता है।

★ कुछ जीव अपना रंग बदलने में माहिर होते हैं क्योंकि इनकी त्वचा में उपस्थित क्रोमेटोफोर रंजकों के कारण ऐसा होता है।

★ सीपी का बाह्य आवरण 'कैल्शियम कार्बोनेट' के बने होते हैं।

★ अल्बाट्रोस पक्षी के पंखों की लम्बाई सर्वाधिक होती है।

★ बुलबुल चिड़िया की आवाज सबसे मुधर होती है।

★ कोयल अंडे देने के लिए घोंसला नहीं बनाती। वह कौवी के घोंसले में अंडे देती है।

★ कबूतर ऐसा पक्षी है जो पोस्टमैन का काम कर सकता है।

★ कछुआ सबसे अधिक दिनों तक जीने वाला प्राणी है।

★ गैंडे पर साधारण गोली का असर नहीं होता है।

वैज्ञानिक जानकारी : घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : कारखानों में चिमनियां क्यों लगाई जाती हैं?

उत्तर : जिस पर्यावरण में तुम रहते हो, उसमें शुद्ध वायु की अधिकता अवश्य होनी चाहिए जिससे सांस लेने में तुम्हें कोई तकलीफ न हो। कारखानों आदि से धुआं निकलता है जो ज़हरीली (हानिकारक) गैसों से पर्यावरण को प्रदूषित करता है। अत: इससे बचने के लिए कारखानों में ऊँची-ऊँची चिमनियां लगाई जाती हैं। इन चिमनियों से निकला हुआ धुआं ऊपरी वायुमंडल से मिलकर तुम्हें होने वाले नुकसान से बचा लेता है।

प्रश्न : पटाखे चलाने से तेज आवाज क्यों आती है?

उत्तर : पटाखों में रासायनिक-ऊर्जा संचित रहती है। जब पटाखे चलाए जाते हैं तो उनमें संचित रासायनिक-ऊर्जा में बदल जाती है। यही कारण है कि पटाखे चलाने से तेज आवाज होती है। ऊष्मा ऊर्जा पैदा होने से पटाखों में रोशनी भी होती है तथा गतिज ऊर्जा पैदा होने से पटाखों के टुकड़े बिखरकर दूर-दूर तक चले जाते हैं।

प्रश्न : साबुन के पानी में बुलबुले क्यों बनते हैं?

उत्तर : जब तुम प्लास्टिक की एक नली में से साबुन के पानी से भरे टब में जोर से फूंक मारते हो तो टब में से बहुत सारे बुलबुले निकलकर हवा में उड़ने लगते हैं। ऐसा क्यों होता है? वास्तव में जब साबुन पानी के साथ मिलता है तो पानी और साबुन के अणु परस्पर मिल जाते हैं और एक पतली फिल्म बना लेते हैं। जब तुम फूंक मारते हो तो हवा इनके मध्य से गुजर कर इन्हें फैला देती है। इस प्रकार बुलबुलों की उत्पत्ति हो जाती है जो फूंक मारने पर उड़ने लगते हैं।

बालकथा : कमल सौगानी

जन्मदिन का अनोखा तोहफा

चमनवन में राजा शेर का शासन चलता था। वन में रहने वाले समस्त जानवर खेती करते थे।

एक साल बरसात नहीं हुई। तमाम फसल सूख गई। पूरे वन के जानवर इसी कारण अपने राजा को लगान नहीं दे सके। लगान न मिलने पर शेर गुस्से में लाल-पीला होते हुए अपने सेनापति भालू से बोला– तुम सिपाहियों सहित जाओ और प्रजा से सूद समेत लगान वसूल करो। यदि कोई लगान देने से इन्कार करे तो उसे पकड़कर राज दरबारं में पेश किया जाए।

राजा शेर का हुक्म होते ही सेनापति भालू सिपाहियों के साथ प्रजा के घरों में पड़े सामान को

जब्त कर लिया और उन्हें भी पकड़कर राजा शेर के पास ले आए।

जब बहुत से जानवरों को पकड़कर राज-दरबार में लाया गया और उन्हें राजा शेर के सम्मुख पेश किया गया तब राजा शेर का बेटा चीकू भी वहाँ मौजूद था। चीकू ने देखा कि सभी जानवर बहुत दुखी थे। वे आपस में अपनी बुरी हालत की चर्चा कर रहे थे। उसने उनकी बातें सुनी उनका दु:ख जानकर उसकी आँखें भर आई। उसने सभी जानवरों को राजा के दंड से मुक्ति दिलाने का निश्चय किया।

अगले दिन चीकू का जन्मदिन था। इस दिन के लिये राजा शेर ने चीकू से कहा था– ''बेटा चीकू! अपने जन्मदिन पर जो भी तोहफा तुम मांगोगे मिलेगा।''

अब चीकू ने तमाम जानवरों का दु:ख दूर करने के लिए एक उपाय सोची। वह अपने पिता

''आज मेरा जन्मदिन है आपने मुझे कोई तोहफा देने का वचन दिया था। अब मैं वह तोहफा आपसे लेने आया हूँ।''

सुनकर राजा शेर बोला– ओह! बेटा चीकू मैं तो बिल्कुल भूल गया था कि आज तुम्हारा जन्मदिन है, चलो सबसे पहले तो हम तुम्हें जन्मदिन पर ढेरों बधाइयां देते हैं और तुम्हारी दीर्घायु और कामयाबी की प्रार्थना करते हैं।

थोड़ी देर बाद चीकू के मुँह में केक रखकर राजा शेर बोला– बेटा, अब मांगो तुम्हें अपने जन्मदिन पर कौन-सा तोहफा चाहिए?

चीकू बोला– ''पिता जी, इन बेचारे गरीबों की छीनी हुई चीजें लौटा दीजिये। इन्हें अपने-अपने घर जाने की अनुमति दीजिए।''

जन्मदिन पर इस तरह के तोहफे की मांग सुनकर राजा शेर का पत्थर दिल मोम बनकर पिघल गया। उसकी आँखों में हर्ष के आंसू छलक आए। फिर उसने अपने बेटे से कहा– ''चीकू बेटा, तूने अपने लिये तो कुछ नहीं मांगा। कुछ तो मांगो।''

इस पर चीकू बोला– पिता जी, आप प्रसन्न हैं तो मुझे पक्का वचन दीजिए कि यदि किसी साल फसल न हो तो उस साल लगान वसूल नहीं किया जायेगा इससे मुझे बड़ी खुशी होगी।

राजा शेर ने ऐसा ही किया। सभी जानवरों को सम्मान के साथ खुशी-खुशी आजाद कर दिया। उनकी जब्त चीजें भी लौटा दीं। भविष्य के लिए फसल न होने पर लगान न लेने का नियम भी बना दिया।

अब तमाम जानवर बड़ी प्रसन्नता से चीकू राजुकमार को आशीष देते हुए अपने घरों को लौट आये।

चिड़िया

बाल कविता : गफूर 'स्नेही'

चिड़िया चीं चीं गीत सुनाती,
बड़ी सुबह से जग जाती।
सुबह इसे बहुत लुभाती,
यह प्रभात में जमकर गाती।।

थोड़ा बहुत खुशी से खाती,
थोड़ा बच्चों को खिलाती।
फैला कर पंख निराले,
छूने चली बादल काले।।

नभ में भी खेला करती,
धूप बारिश चोंच भरती।
थककर लौटती है नीड़,
उसे पसन्द शोर न भीड़।।

उसके छोटे छोटे खेल,
बच्चों से खाते हैं मेल।
इससे मिले खुशी आनंद,
सजे जैसे कविता छंद।।

प्रस्तुति : कैलाश त्रिपाठी

बाल मुक्तक

सदा किताबें देती ज्ञान।
पढ़-पढ़कर बनते विद्वान।
जो चाहो वह जानो समझो,
भाषा, गणित, धर्म, विज्ञान।

आओ हम सब वृक्ष लगायें।
सुखद मनोहर धरा बनायें।
वृक्ष रोकते वायु प्रदूषण,
जीवन में खुशहाली लायें।

साहस दृढ़ता होती जिनके।
मंजिल पास सदा है उनके।
सीखा नहीं हार मानना,
जीत पास आती है चलके।

होते सदा वृक्ष अनमोल।
कौन चुकाता उनका मोल।
वृक्ष लगाना और बचाना,
देना सबसे ऐसा बोल।

सूरज आता सदा जगाने।
आती चिड़ियां गीत सुनाने।
लगता हमको कितना अच्छा,
मम्मी आती हमें उठाने।

किट्टी

लेखन एवं चित्रांकन

–अजय कालड़ा

ठीक है, हम सब दीपावली पर गरीब बच्चों को मिठाई और कपड़े गिफ्ट में देंगे और उन सभी के साथ दीपावली भी मनाएंगे।
यह तो बहुत ही अच्छा आइडिया है।
चलो, चलो सभी बच्चे एक लाइन में बैठ जाओ।

आज तो बहुत मजा आया। इन सभी बच्चों के साथ दीपावली मनाकर।
आज शाम को तुम सभी मेरे घर पर आना। हम सब साथ में मिलकर दीपावली मनाएंगे।
हम सब आ गए, किट्टी।

चलो! हम सब अब आतिशबाजी करते हैं।
लग गई न चोट, किट्टी बेटा। मैंने तुम्हें समझाया था कि दीपावली पर ज्यादा पटाखे नहीं जलाने चाहिए। इससे पर्यावरण प्रदूषित होता है।
ठीक है, आंटी अब हम कभी पटाखे नहीं जलाएंगे। दीपावली खुशियों और रोशनी का त्योहार है। हम सब दीये जलाकर खुशियां मनाएंगे।

कहानी : सेवा नन्दवाल

मेरी क्रिसमस

सांता क्लॉज़ की टीम फुर्ती से बच्चों को मनपसन्द वस्तुएं उनके मौजे में रखती जा रही थी। यह क्रिसमस की पूर्व रात्रि थी। जिसमें बच्चों को मनपसन्द तोहफे प्राप्त होते थे। इस हसीन रात का सब बच्चों को बेसब्री से इन्तजार रहता था क्योंकि इस समय उनकी हसरतों की पूर्ति होती थी। इस अभियान को सांता के सहयोगी बखूबी अंजाम दे रहे थे। एकाएक एक बच्चे के मौजे में रखी फरमाइश पढ़कर सहयोगी सकते में आ गये।

''क्या हुआ, उसकी मांगी हुई वस्तु हमारे पास में नहीं है क्या?''– सांता ने पूछा।

''हाँ इस बच्चे की फरमाइश बड़ी अजीब है।''– एक सहयोगी ने बताया।

''कोई महंगी वस्तु चाहिए उसे।'' सांता ने जानना चाहा।

उत्तर देने के बजाय सहयोगी ने फरमाइश लिखा कागज़ का टुकड़ा पकड़ा दिया।

लुईस ने लिखा था– ''मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं सिर्फ एक सद्‌गुण चाहिए।''

''कौन-सा गुण यह नहीं लिखा लुईस ने।'' सहयोगी ने शिकायत की।

सांता को अंततः उस बच्चे को जाकर जगाना पड़ा। ''गुण बाहर से आरोपित नहीं किये जा सकते बेटे।''

तो अन्दर से दे दो।– लुईस ने विनम्रतापूर्वक कहा।

सांता क्लॉज़ उसकी चतुराई पर खिलखिलाते

हुए बोले– ''अच्छा, कौन सा सद्गुण चाहिए तुम्हें?''

लुईस कुछ संकुचाते हुए बोला– ''त्याग का, सहायता का ... जब मैं कोई अच्छी चीज खाता हूँ तो उसे किसी को देने का मन नहीं करता, चाहे फिर सामने भाई-बहन, दोस्त या पड़ोसी हो।''– लुईस ने बताया।

''तो मत दो।''– सांता ने मुस्कुराते हुए कहा।

''लेकिन ईश्वर ने कहा है कि जब तुम्हारा पड़ोसी भूखा हो तो तुम कैसे भरपेट खा सकते हो? अगर तुम्हारे पास एक रोटी है तो आधी उसे दो।''– लुईस बोला।

''हाँ, यह पढ़ने-सुनने में अच्छा लगता है पर ...'' एक सहयोगी ने कहना चाहा तो लुईस ने टोक दिया। ''नहीं ... मैं चाहता हूँ कि आप मेरे मन में कुछ ऐसा जादू कर दीजिए कि मैं अपनी चीजें दूसरे को खुशी-खुशी बांट सकूं।'' लुईस ने अपनी इच्छा दोहराई।

''अगर ईश्वर को खुश करना चाहते हो तो उनकी बताई बातों का पालन करो'' सांता ने समझाया।

''वही तो मैं चाहता हूँ पर मन नहीं करता।'' लुईस ने कठिनाई दर्शाई।

''मुझसे क्या चाहते हो?''– सांता ने पूछा।

''यही कि आप मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं ऐसा करने में सक्षम हो सकूं।''– लुईस बोला।

''लेकिन इसके लिए प्रयास तुम्हें करना

होगा।''– सांता बोले।

''हाँ मुझे पता है लेकिन आपके आशीर्वाद का हाथ सिर पर रखा जाएगा तो मुझमें दोगुनी ताकत आ जाएगी। मुझे भय रहेगा कि अगर मैं अपने रास्ते से भटका तो आप देख रहे होंगे।''– लुईस ने मुस्कुराते हुए बताया।

''बहुत समझदार बच्चे हो। यह लो मैंने अपना हाथ तुम्हारे सिर पर रखकर आशीर्वाद दिया कि अब तुम अपनी चीजों को प्रसन्नतापूर्वक बांट सकोगे।''– सांता ने कहा।

धम्म् से आवाज़ हुई तो लुईस की नींद उचट गई। सामने कोई नहीं था। हाँ मौजा अवश्य हिल रहा था जैसे कोई अभी छूकर गया हो।

''क्या बात है भैया, आज जल्दी जाग गये?''– छोटी बहन ईशा ने पूछा।

''भूल गई आज क्रिसमस है। अच्छा तू मुझसे स्केच पेन का सेट मांग रही थी। वह मेरी अलमारी में से निकाल ले।''– लुईस बोला।

प्रसन्नतापूर्वक ईशा ने स्केच पेन का सेट निकाल लिया और पूछा– ''कितने लूं और कब लौटाऊं?''

''सारे ले ले और मत लौटाना।''– लुईस मुस्कुराते हुए बोला।

ईशा भावविभोर हो गई। भाई में यह अकस्मात् परिवर्तन कैसे आया। शायद क्रिसमस का प्रभाव। उसके मुँह से अनायास निकल गया। ''मेरी क्रिसमस भैया।''

''तुमको भी।''– कहते हुए लुईस खिलखिला पड़ा।

प्रस्तुति : किरण बाला

क्या आप जानते हैं?

- उड़ने वाली एलबट्रास नामक चिड़िया के परों का फैलाव 3.63 मीटर तक हो सकता है।
- अमेरिका के गिद्ध लगभग 100 किलोमीटर तक की दूरी बिना पंख फड़फड़ाए ही पार कर सकते हैं।
- अन्डीयन कॅन्डॉर नामक शिकारी पक्षी का वजन 11 किलोग्राम तक होता है।
- उत्तर ध्रुवीय कुररी चिडिया 22530 किलोमीटर लंबी उड़ान भर सकती है।
- हंस 8230 मीटर की ऊँचाई पर भी उड़ सकते हैं।
- काली कुररी नामक चिड़िया घोंसला छोड़ने के बाद लगातार तीन-चार साल तक हवा में रहती है।
- दक्षिणी ध्रुवीय पेंग्विन 18 मिनट तक पानी के अंदर रह सकता है।

- बाज एक कबूतर को 8 किलोमीटर की दूरी से भी देख सकता है।
- बाल्ड ईगल का घोंसला 2. 9 मीटर चौड़ा, 6 मीटर गहरा तथा 6 टन भारी हो सकता है।
- पूर्वी दक्षिणी अमेरिका के टौकन पक्षी की चोंच उसके शरीर के बराबर होती है।
- पेरेग्रीन फाल्कन नामक शिकारी बाज जब 45 डिग्री के कोण पर झपटता है तो उसकी रफ्तार 350 किलोमीटर प्रतिघंटा हो सकती है।
- वेम्पायर बैट नामक चमगादड़ केवल खून चूसकर ही जिन्दा रहता है।
- कैसोवरी नामक चिड़िया अपने चाकू जैसे पंजे से आदमी की हत्या कर सकती है।
- कबूतर लंबी से लंबी यात्रा करने के बाद भी बिना रास्ता भूले अपने स्थान पर वापस आ जाते हैं।
- भूरे गले और नोकदार पूंछ वाली अबाबील चिड़िया 250-300 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से उड़ती है।

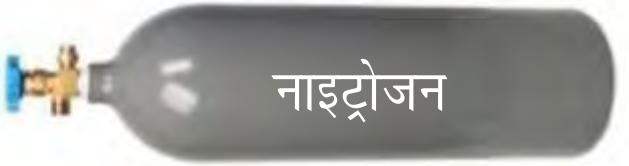

विज्ञान लेख : अर्चना जैन

रंगहीन, गंधहीन : नाइट्रोजन गैस

कुदरत के हरे-भरे पेड़-पौधे हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। जिन्दा रहने के लिए ऑक्सीजन की जरूरत होती है लेकिन आपको जानकर अचरज होगा कि वातावरण में मात्र 24 प्रतिशत ऑक्सीजन है और 75 प्रतिशत नाइट्रोजन है। बाकी एक प्रतिशत में अन्य प्रदूषित गैसों का मिश्रण है।

प्राकृतिक शुद्ध हवा में नाइट्रोजन की भी खास भूमिका है। यह हवा में ऑक्सीजन को 'डाइल्यूट' (विरल) कर देती है ताकि एक समय में जरूरत से ज्यादा ऑक्सीजन हमें न मिल सके। हाँ, ऑक्सीजन उसी समय उपयोगी होती है जब वह अन्य रसायनों के साथ मिलकर 'कंपाउड' (यौगिक) बनाती है। यह रासायनिक तौर पर निष्क्रिय है और आसानी से अन्य तत्वों के साथ नहीं मिलती।

नाइट्रोजन रंगहीन, गंधहीन, बिना जायके वाली गैस है जो जल में बहुत ही मामूली घुलती है। जब जबरदस्त ठंड या दबाव का प्रयोग किया जाए तो यह तरल बन जाती हे। जिस तापमन पर यह तरल बनती है वह है 218 डिग्री सेंटीग्रेड।

यूं जीवन के लिए नाइट्रोजन का अपना महत्व है। हर जीवित चीज निरन्तर नाइट्रोजन को उस रूप में तलाशती है जिससे वह शरीर में उसका प्रयोग कर सके।

यह सच है, नाइट्रोजन मानव, पौधों और जानवरों के शरीर का महत्वपूर्ण हिस्सा है। नाइट्रोजन उस प्रोटीन पदार्थ का आवश्यक हिस्सा है जिससे मानव के शरीर का समूचित विकास होता है। अगर यह पदार्थ नहीं होगा तो शरीर का विकास या अंदर की टूट-फूट की 'रिपेयर' (मरम्मत) असम्भव है। यही वजह कि पृथ्वी की सतह की हर वर्गमील के ऊपर लगभग 20,000,000 टन नाइट्रोजन है।

इन्सान शुद्ध नाइट्रोजन का इस्तेमाल नहीं कर सकता। इन्सान को अपनी जरूरत के मुताबिक नाइट्रोजन प्रोटीन्स से मिलती है। यह प्रोटीन हमें पौधों या पौधे खाने वाले जानवरों को खाकर हासिल होती है।

हाँ, प्रकृति में 'लेगयूक्स' कहे जाने वाले कुछ ही पौधे हैं जो हवा की शुद्ध नाइट्रोजन का प्रयोग करते हैं।

चलते-चलते यह बात भी अच्छी तरह जान लें कि सांस के माध्यम से नाइट्रोजन गैस हमारे जिस्म में प्रवेश तो करती है लेकिन हमारे जिस्म की कुछ इन्द्रियां उसके प्रयोग पर तुरन्त रोक लगा देती हैं। हाँ एक पल हम सांस लेते हैं और दूसरे पल हम सांस के जरिए नाइट्रोजन को बाहर निकाल देते हैं।

बाल कविता : हरीप्रसाद धर्मक

प्यारे बच्चे

बच्चे मन के सच्चे।
हैं ये कितने अच्छे।

मन होता इनका निर्मल।
लगता जैसे गंगाजल।

छल-कपट न होता इनमें।
भेदभाव न होता इनमें।

छोटा-बड़ा ये न जानें।
भेदभाव को ये न मानें।

मित्र कोई हो खेलें साथ।
साथ में खायें घूमें साथ।

मित्रों के संग पढ़े-पढ़ायें।
संग-संग विद्यालय जायें।

बाल कविता : महेन्द्र सिंह शेखावत

अच्छे बच्चे

हँसते-गाते आगे बढ़ते,
कभी न पीछे हटते हैं।
सच्चाई के पथ पर चलते,
जो अच्छे बच्चे होते हैं।।

रहते दूर बुराई से ये,
छल-कपट से बचते हैं।
जग के तम को दूर भगाते,
दीपक बन कर जलते हैं।।

मीठी-मीठी वाणी बोलें,
समय व्यर्थ न खोते हैं।
करते नित सम्मान बड़ों का,
जो अच्छे बच्चे होते हैं।।

पढ़ो और हँसो

दीनू : (रामू से) तेरी इतनी हिम्मत जो तूने मुझ पर हाथ उठाया। मैं तेरी खाट खड़ी कर दूंगा।

रामू : जा-जा बहुत देखे हैं खाट खड़ी करने वाले, तेरे बस की बात नहीं मेरी खाट खड़ी करना।

दीनू : क्यों नहीं है?

रामू : क्योंकि मैं फर्श पर सोता हूँ।

माँ : (बेटी से) दिशा, तुम पौधों के पास क्या कर रही हो?

दिशा : मम्मी, मैं पौधों को पानी दे रही हूँ।

माँ : लेकिन वहाँ तो तेज बारिश हो रही है।

दिशा : आप चिन्ता न करे माँ, मैंने छाता ले रखा है।

गुड़िया : मम्मी आपने जो एक सप्ताह पहले एक गुलाब की कलम लगाई थी। उसमें जड़ें अभी तक नहीं निकली हैं।

मम्मी : पर तुम्हें कैसे पता?

गुड़िया : मैं उसे रोज उखाड़कर देखती हूँ।

– मुस्कान बिल्दानी (बड़नेरा)

पत्नी : (पति से) रात को मोबाइल चार्जिंग पर मत रखो।

पति : क्यों?

पत्नी : बैटरी ब्लास्ट हो जायेगी।

पति : तू चिन्ता मत कर मैंने बैटरी निकाल दी है।

राकेश : (पहलवान से) तुम एक बार में कितने आदमी उठा सकते हो?

पहलवान : ज्यादा से ज्यादा चार-पांच।

राकेश : धत्त! तुमसे अच्छा तो मेरा मुर्गा है जो सुबह पूरे मोहल्ले को उठा देता है।

सेठ : (नौकर से) तुमने लेटर बॉक्स में खत डाल दिया?

नौकर : नहीं सेठजी।

सेठ : क्यों नहीं डाला?

नौकर : कैसे डालता? लेटर बॉक्स के बाहर ताला लगा था।

एक गृहिणी ने दूधवाले से कहा– इस दूध पर न मलाई आती है और न ही मक्खन आता है।

दूधवाला बोला– बहन जी, मेरी भैंस को मक्खनबाजी से सख्त नफरत है।

– अमित कुमार (दरभंगा)

एक पागलखाने में पागल नाच रहे थे परन्तु एक पागल खामोश बैठा था।

डॉक्टर : (खामोश बैठे पागल से) तुम खामोश क्यों बैठे हो?

पागल : मैं दूल्हा हूँ। ये मेरे बाराती।

पापा : (सोनू से) तुम्हें गणित में कितने नम्बर मिले?

सोनू : जी दिनेश से 10 नम्बर कम।

पापा : दिनेश को कितने नम्बर मिले?

सोनू : जी दस।

शिक्षक : (बच्चे से) तुम इतनी देर से क्यों आये?

बच्चा : सर! स्कूल के बाहर सड़क पर बोर्ड पर लिखा था कि स्कूल नजदीक है, कृपया धीरे चलें।

राहुल : कमरे में इतना अंधेरा है, बल्ब क्यों नहीं जलाते?

विकास : बल्ब जलाने के लिए माचिस नहीं है।

राजू : अमरुद तोड़ने का सबसे अच्छा समय कौन सा होता है?

राजा : जब बाग में माली न हो।

– सुशान्त सागर (मोतीहारी)

ग्राहक : ये रसगुल्ले कितने के हैं?

दुकानदार : एक रुपये का एक।

ग्राहक : और ये रस?

दुकानदार : बिल्कुल फ्री में।

ग्राहक : तो मुझे सिर्फ रस दे दो।

अमित : अरे यार रवि, देखकर चला करो, नहीं तो किसी गाड़ी के नीचे आ जाओगे।

रवि : यार, तू घबरा मत। मैं तो कई बार हवाई जहाज के नीचे आ चुका हूँ।

राजू : (राकेश से) अरे देखो, भूकम्प आ गया। पूरा घर हिल रहा है।

राकेश : तुम टेंशन क्यों लेते हो? आराम से सो जाओ। घर तो मकान मालिक का गिरेगा न।

डॉक्टर : (पप्पू से) आपका वजन कितना है?

पप्पू : जी, चश्मे के साथ पूरा 75 किलो।

डॉक्टर : और चश्मे के बगैर।

पप्पू : जी, मुझे दिखता ही नहीं है, क्या पता?

– आकाश मेघानी (गोंदिया)

जानकारीपूर्ण लेख : कैलाश जैन

आग उगलता पहाड़ है ज्वालामुखी

ज्वालामुखी उन प्राकृतिक विपदाओं में से है जिस पर हमारा विज्ञान अब तक काबू नहीं पा सका है। भूकम्प की तरह ज्वालामुखी भी पृथ्वी की आन्तरिक उथल-पुथल का नतीजा है। जब किसी ज्वालामुखी में अचानक विस्फोट होता है तो आसमान को छूती आग की लपटें धुएं के बादल कई प्रकार की विषैली गैसों के साथ पिघली हुई गर्म लाल चट्टानें लावे के रूप बह निकलती हैं और आसपास के क्षेत्रों मे बरबादी का तांडव-नृत्य करने लगती हैं।

ज्वालामुखी क्या है? इसका निर्माण कैसे और किन परिस्थितियों में होता है? इनके विस्फोट के कारण क्या हैं? इन सभी प्रश्नों का जवाब तलाशने के लिए हमें पृथ्वी की आंतरिक संरचना के बारे में समझना होगा। यह पृथ्वी, जिस पर हम रहते हैं, मोटाई में तीन स्तरों में बंटी है। इसके सबसे ऊपरी भाग को 'क्रस्ट' कहा जाता है। 'क्रस्ट' मुख्यत: रेत व मिट्टी का बना है। इसके नीचे वाली परत को 'मेटल' कहा जाता है। यह भाग लोह-तत्वों और मैग्नीशियम युक्त ठोस चट्टानों का बना होता है। सबसे निचले भाग को 'कोर' के नाम से जाना जाता है। इस भाग में मुख्य रूप से लौह और निकेल रहता है।

पृथ्वी की ऊपरी सतह क्रस्ट मुख्यत: सात बड़ी और अनगिनत छोटी प्लेटों से मिलकर बनी है। धरती निरन्तर अपनी धुरी पर घूमती रहती है। इस दौरान ये प्लेटें धीरे-धीरे अपने स्थान से खिसकती रहती हैं। इस प्रक्रिया में इन प्लेटों में आपसी टकराव होता है। परिणामस्वरूप पृथ्वी के अन्दर दबाव बढ़ जाता है और घर्षण से उत्पन्न हुई असीम ऊर्जा स्थान के अभाव में नीचे की ओर प्रवाहित होने लगती है। इस ऊर्जा की तेज शक्ति इतनी अधिक होती है कि यह निचले स्तर पर स्थित ठोस चट्टानों को पिघला देती है। चट्टानों के इस पिघले हुए स्वरूप को मैग्मा कहा जाता है। इसमें भाप, कार्बन डाईऑक्साइड, हाइड्रोजन, सल्फाइड आदि घातक गैसें भी भरी रहती हैं। यह मैग्मा भीतरी दरारों से होकर ऊपर की तरफ बढ़ने लगता है फिर यह पृथ्वी की सतह से कोई तीन-चार मील नीचे पहुँचकर किसी स्थान पर इकट्ठा होंने लगता है। पृथ्वी की ऊपरी सतह की प्लेटों के घर्षण से नीचे स्थित मैग्मा रूपी लावे में दबाव बढ़ने लगता है। जब यह अपने चरम-बिन्दु पर जा पहुँचता है तो यह लावा पृथ्वी का सीना फाड़कर विस्फोट के साथ बाहर निकलता है और बहने लगता है। विस्फोट

में इस सुलगते और उबलते लावा के साथ राख व धुएं के बादल और विषाक्त गैसें भी निकलकर पूरे वातावरण पर छा जाती हैं।

ज्वालामुखी के निर्माण की प्रक्रिया हजारों लाखों वर्षों तक चलती रहती है। पृथ्वी के भीतरी भाग का तापमान प्रति सौ फीट नीचे जाकर एक डिग्री सेंटीग्रेड बढ़ता जाता है। ऐसी स्थिति में कुछ गहराई के बाद सभी चट्टानों का तरल अवस्था में होना अनिवार्य है किन्तु स्थिति यह है कि जिस प्रकार गहराई के साथ तापमान भी क्रमशः बढ़ता जाता है उसी प्रकार गहराई के साथ दबाव भी बढ़ता जाता है। यह दबाव चट्टानों को ठोस शक्ल में बनाये रखता है। जब किसी परिस्थिति या कारण से यह दबाव कुछ कम हो जाता है तब उस स्थान की चट्टानें पिघलकर मैग्मा का रूप धारण कर लेती हैं और प्रक्रिया पूरी होते ही ज्वालामुखी के विस्फोट के रूप में फट पड़ती हैं।

आज से अरबों वर्ष पूर्व हमारी यह धरती आग का धधकता हुआ गोला थी। धीरे-धीरे जब यह ठंडी होने लगी तो इसका ऊपरी हिस्सा जमकर ठोस हो गया किन्तु इसकी भीतरी परतें प्रचण्ड आग की तरह दहकती रही। जब आंतरिक घर्षण व दबाव अपनी चरम सीमा तक जा पहुँचा तो पूरी पृथ्वी पर लाखों ज्वालामुखियों का एक साथ भीषण विस्फोट हुआ। पृथ्वी के गर्भ में समाया

अथाह लावा सम्पूर्ण पृथ्वी के धरातल पर फैल गया। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि विश्व के अधिकांश पर्वत, पहाड़, घाटियां आदि उसी लावे के प्रवाह का प्रतिफल हैं।

लाखों करोड़ों वर्ष पहले बने ज्वालामुखी आज भी अस्तित्व में है। ये ज्वालामुखी जापान, फिलीपींस, इंडोनेशिया, अमेरिका के पश्चिमी किनारे और पूर्व सोवियत संघ के कुछ हिस्सों में फैले हुए हैं। इस क्षेत्र को अग्नि का घेरा कहा जाता है। इन क्षेत्रों में अक्सर ज्वालामुखी के विस्फोट होते रहते हैं।

विश्व में वर्तमान समय में करीब पांच सौ ज्वालामुखी आकार की दृष्टि से कई सौ फुट चौड़ाई से लेकर कई मील तक चौड़े हो सकते हैं।

अब तक का सबसे भीषण ज्वालामुखी विस्फोट 27 अगस्त 1983 में इंडोनेशिया के जावा और सुमात्रा के बीच स्थित काकताओ द्वीप में हुआ। इस भीषण आग उगलते लावे में 163 गाँव पूरी तरह तहस-नहस हो गये। समुद्र से उठी प्रचंड लहरों से छत्तीस हजार लोग मारे गये। यह विस्फोट हाइड्रोजन बम से 36 गुना अधिक ताकतवर था। चट्टानों के टुकड़े आस-पास के पचास किलोमीटर की ऊँचाई तक उछल गये। पृथ्वी के एक तिहाई हिस्से पर इस विस्फोट की गर्जना सुनाई दी। इस ज्वालामुखी विस्फोट में 18 घन किलोमीटर लावा बाहर निकला।

दूसरे ज्वालामुखी विस्फोटों में सन् 1815 में सम्बावा द्वीप में हुए विस्फोट का नाम लिया जा सकता है। लकी (आइसलैंड) के विस्फोट में तो लावा 70 किलोमीटर दूर तक बहता चला गया था। मई 1980 में सेंट हेलन्ज और मई 1982 के अल शिकोन ज्वालामुखी विस्फोट भी उल्लेखनीय हैं। 1986 में जापान के सकुरीजका में भी शक्तिशाली ज्वालामुखी विस्फोट हुआ था।

यूं तो ज्वालामुखी का विध्वंसकारी स्वरूप ही प्रमुख है किन्तु कई पहलुओं से यह मनुष्य के लिए लाभदायक भी है। भूगर्भ शास्त्रियों के मतानुसार चट्टानों, पर्वतों, समुद्री टापुओं आदि के निर्माण में ज्वालामुखियों की भूमिका महत्वपूर्ण हैं इसके अतिरिक्त इसके लावे में कई मूल्यवान धातुएं चांदी, सोना, तांबा, जस्ता, सीसा आदि भी प्राप्त होते हैं।

इंडोनेशिया का ल्यूजर ज्वालामुखी अपने भीतर हीरे समाये हुए हैं। जब वह फटता है तो लावे में से बेशकीमती हीरे निकलते हैं। विश्व का सर्वाधिक ऊँचा सुसुप्त ज्वालामुखी पर्वत अर्जेंटीना में स्थित हैं इसकी ऊँचाई 22834 फुट है। सबसे ऊँचा जीवित ज्वालामुखी भी अर्जेंटीना में ही स्थित है। वोल्कान एन्तोफैला नामक यह ज्वालामुखी बीस हजार तेरह फीट ऊँचा है। इनके अलावा अन्य उल्लेखनीय ज्वालामुखियों में सिसली का एटना (10705 फुट), जापान का फुजी (12395 फुट), पूर्वी अफ्रीका का किलोमंजरो (19564 फुट) आदि प्रमुख हैं।

प्रेरक-प्रसंग : अंकुश जैन

जब चाणक्य ने चन्द्रगुप्त के प्राणों की रक्षा की

उन दिनों सम्राट चन्द्रगुप्त रोग शैय्या पर पड़े थे। सारी प्रजा चिंतित थी। रानी की आँखों की नींद गायब थी। गुरुदेव चाणक्य परेशान थे। दूर-दूर से वैद्य और हकीम बुलाये गये थे। दवाईयां दी जा रही थीं लेकिन महाराज की स्थिति में कोई सुधार नजर नहीं आ रहा था।

महाराज की बीमारी की खबर सुनकर उनके दुश्मन सक्रिय हो गये थे। वे कई तरह की व्यूह रचना करने लगे। गुरुदेव महाराज की बीमारी से अधिक उनके शत्रुओं से चिंतित थे। गुरुदेव ने राजमहल में आने-जाने वाले प्रत्येक व्यक्ति की निगरानी रखना शुरू कर दी।

गुरुदेव की इस कार्यप्रणाली से कभी-कभी तो राजा-रानी भी परेशान हो जाते लेकिन वे गुरुदेव को कुछ कह नहीं सकते थे।

एक दिन विशेष रूप से बुलाए गये, नये वैद्यराज की दवा चल रही थी। महाराज को कुछ फायदा होता भी नज़र आ रहा था कि अचानक गुरुदेव रात को दवा देते समय महाराज के शयनकक्ष में आ गये। वैद्यराज दवाई का प्याला महाराज के हाथों में दे ही रहे थे कि गुरुदेव की कड़क आवाज गूंजी– ठहरो वैद्यराज, यदि अपना भला चाहते हो तो यह दवा का प्याला अभी इसी वक्त खुद पी जाइये।

लेकिन गुरुदेव... राजा ने बीच में कहना चाहा तो गुरुदेव ने उन्हें रोक दिया और वैद्यराज को पुनः आदेश दिया कि सुना नहीं वैद्यराज, इस प्याले की दवाई आप इसी समय खुद पी जाइये।

वैद्यराज के तो हाथ-पैर थरथराने लगे। उनके माथे पर पसीना छलक आया। कंठ सूख गया। मुँह से एक शब्द भी नहीं निकल सका। हाथ में प्याला ले वे पत्थर की मूर्ति की तरह खड़े रहे। लगा कुछ लोग बीच-बचाव की सोच रहे थे लेकिन गुरुदेव चाणक्य की आँखें अंगारे की तरह लाल हो रही थीं। किसी ने बीच में कुछ बोलने की हिम्मत नहीं की। कोई चारा नहीं देखकर वैद्यराज दवा का प्याला खुद पी गये। क्षणभर बाद ही सबने देखा कि उनके प्राण प्रखेरू उड़ गये। गुरुदेव कुछ नहीं बोले और उसी क्षण शयन कक्ष से बाहर निकल गये। अब जाकर यह रहस्य लोगों की समझ में आया। गुरुदेव चाणक्य के प्रति सम्राट चन्द्रगुप्त का सिर श्रद्धा से झुक गया।

संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन' (अनूपगढ़)

कभी न भूलो

★ दर-दर भटकने वाला जिसे कोई भी नहीं पूछता हो, वह सद्गुरु द्वारा अपनाए जाने पर पूजा के काबिल बन जाता है।

– बाबा गुरबचन सिंह जी

★ इन्सान वही है जो दूसरे के सुख-दुख को अपना मानकर उसके सुख-दुख में शामिल होता है, दूसरे की तरक्की को देखकर खुश होता है।

– बाबा हरदेव सिंह जी

★ परमात्मा की जानकारी के बाद ही इन्सान के व्यवहार और बोली में बदलाव आता है और जीवन में नम्रता आती है।

– सद्गुरु माता सुदीक्षा जी

★ जब तक जीना, तब तक सीखना, अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।

– स्वामी विवेकानंद

★ कर्म ज्ञान और भक्ति ये तीनों जहाँ मिलते हैं। वहीं सर्वश्रेष्ठ पुरुषार्थ जन्म लेता है।

– महर्षि अरविंद

★ मूल्यहीन व्यक्ति केवल खाने के लिए जीते हैं, मूल्यवान व्यक्ति केवल जीने के लिए खाते हैं। **– सुकरात**

★ बुद्धि का विकास मानव के अस्तित्व का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए।

– बी. आर. अम्बेडकर

★ विश्व के निर्माण में जिसने सबसे अधिक संघर्ष किया है और सबसे अधिक कष्ट उठाया है वह माँ हैं **– हर्ष मोहन**

★ मानव जीवन की सफलता इसी में है कि वह उपकारी के परोपकार को कभी न भूले।

– महाभारत

★ अधिकांश लोग पढ़ तो सकते हैं लेकिन नहीं पहचान सकते कि पढ़ने लायक क्या है?

– जी. एम. ट्रेवेल्यन

★ शिक्षा का मकसद है खाली दिमाग को खुले दिमाग में परिवर्तन करना। **– मैल्कम फोब्स**

★ सफलता एक प्रतिशत प्रेरणा और निन्यानवे प्रतिशत मेहनत से मिलती है। **– एडिसन**

★ कल्पना की शक्ति हमें अनंत बनाती है।

– जॉन मुडर

★ प्रात:काल का भ्रमण पूरे दिन के लिए वरदान होता है। **– हेनरी डेविड थोरो**

★ सबसे पहले बुरा मत सोचो। हर एक विषय में सच्चा दृष्टिकोण अपनाया जाए तो अनेक दोषों से सरलता से बचा जा सकता है।

★ सफलता हमारा परिचय दुनिया को कराती है

★ कोई भी कार्य करने से पहले सोचो, समझो फिर करो।

★ सच्ची श्रद्धा और ज्ञान के सहारे मनुष्य भवसागर पार कर जाता है। अज्ञानी लोग बीच में डूब जाते हैं। **– अज्ञात**

Nirankari Radio
radio.nirankari.org
24x7
KIDS DIVINE
ek ruhani muskaan
kids.nirankari.org
Catch the latest episode
on 23rd of every month
NEWS DIVINE
www.nirankari.org
Catch the latest episode
on 10th of every month
Bhakti
Sangeet
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 20th of every month
Voice DIVINE
radio.nirankari.org
Catch the latest episode
on 1st & 16th of every month
Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month
SANT NIRANKARI MISSION

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : : :
Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

पाठकों से निवेदन

हिन्दी, पंजाबी तथा अंग्रेजी भाषा की निरंकारी पत्र-पत्रिकाओंः सन्त निरंकारी, एक नज़र तथा हँसती दुनिया के पाठकों से निवेदन है कि पत्र-पत्रिकाओं के रिकॉर्ड को अपडेट किया जा रहा है। अतः आप अपना मोबाइल नं. और ई-मेल पत्रिका विभाग को

ई-मेल : sulekh.sathi@nirankari.org और patrika@nirankari.org तथा

WhatsApp Mobile No. 9266629841 पर अतिशीघ्र भेजें ताकि आपका रिकॉर्ड update किया जा सके।

लेखकों के लिए

☞ ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित होने वाली 'सन्त निरंकारी' विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक पत्रिका है जिसमें अनुभवी लेखकों की रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं। अध्यात्म, साहित्य एवं समाज के रचनात्मक समन्वय का प्रयास भी इस पत्रिका द्वारा किया जाता है।

☞ तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पाक्षिक समाचार-पत्र 'एक नज़र' की विषय-वस्तु मुख्यतः दार्शनिक लेख, गहरे पानी पैठ, बाल जगत, ज्ञान-विज्ञान, प्रेरक प्रसंग, प्रेरक विभूति आदि हैं। इसके स्तर में सुधार तथा इसे और आकर्षक बनाने के लिए निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं।

☞ चार भाषाओं में छपने वाली बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी बाल मासिक 'हँसती दुनिया' में रोचक कहानियाँ, ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक लेख, कविताएं समाहित होते हैं।

उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ सामग्री जैसे लेख, गीत, कहानी, कविताएं आदि केवल ई-मेलः sulekh.sathi@nirankari.org और editorial@nirankari.org पर ही भेजें ताकि आपकी रचनाओं को समयानुसार प्रकाशित किया जा सके।

—Sulekh 'Sathi'
Managing Editor, Magazine Department

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)